Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-18
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 18 जुलाई से 24 जुलाई 2018 तक
आषाढ़ कृष्ण शुक्ल षष्ठी से आषाढ़ शुक्ल द्वादशी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

पृथ्वी पर अमृत... पृष्ठ- 2

पिसती दिल्ली की... पृष्ठ- 3

कैंसर तक में लाभ.. पृष्ठ- 4

कामनाओं का अथाह... पृष्ठ- 5

सपने देखे जनता... पृष्ठ- 12

- बीच मंझधार में छोड़ दिया जनता का साथ
- जम्मू कश्मीर में राष्ट्रवाद का संघर्ष
- नागालैण्ड की सांस्कृतिक विरासत
- जम्मू-कश्मीर चिदम्बरम् साहब का अलगाववादी दाँव
- राख से उभरा इजरायल

फ्रांस के विलर्स गिस्लेन में भारतीय सैनिकों की याद में बनाया जाएगा युद्ध स्मारक

हिन्दू महासभा ने दी बधाई

● संवाददाता ●

पेरिस से करीब २०० किलोमीटर दूर विलर्स गिस्लेन में प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस की आजादी में अविभाजित भारत के सैनिकों के योगदान को रेखांकित करने के लिए एक युद्ध स्मारक का निर्माण करेगा। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा भारत विलर्स गिस्लेन में भारतीय सशस्त्र बल के स्मारक का निर्माण करेगा। उन्होंने कहा कि यह यूरोप में ऐसा दूसरा स्मारक होगा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान शेष पृष्ठ 11 पर

बुरहान वानी के गढ़ में घुसकर सुरक्षाबलों ने आतंकियों को घेरा, ३ को किया ढेर

आंतक का सफाया होने तक कार्रवाई जारी रहे – हिन्दू महासभा

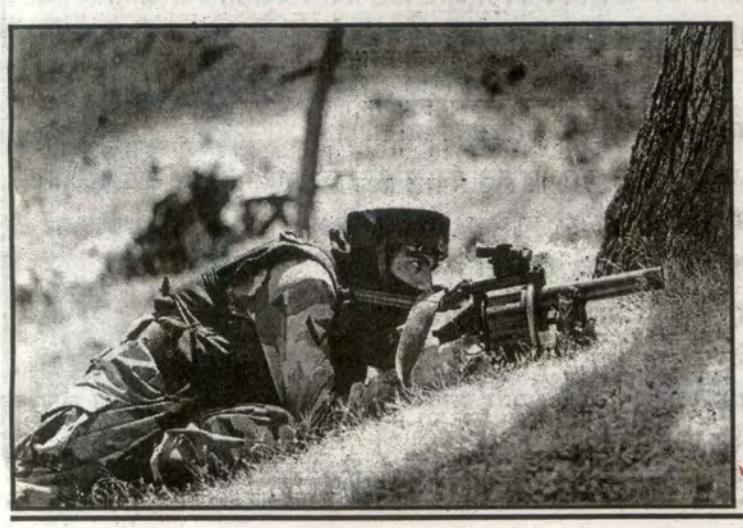

● संवाददाता ●

केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जम्मू कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन फिर से शुरू करने के ऐलान के साथ ही भारतीय सुरक्षाबलों ने आतंकियों के खात्मे के लिए ऑपरेशन तेज कर दिया है। आतंकी बुरहान वानी के गढ़ त्राल में सुरक्षाबलों की आतंकियों के साथ हुई मुठभेड़ में ३ आतंकियों के मारे जाने की खबर है। मुठभेड़ में जैश–ए–मोहम्मद का ऑपरेशन कमांडर भी मारा गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि विशिष्ट खुफिया जानकारी मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके को घेर कर तलाशी अभियान शुरू किया था, इसी दौरान मुठभेड़ शुरू हुई। इसके पहले पुलिस महानिदेशक डीजीपी एस पी वैद ने ट्विटर पर लिखा कि हिना त्राल में मुठभेड़ जारी। जैश ए मोहम्मद के तीन प्रमुख आतंकवादी फंसे। इससे पहले केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने जम्मू कश्मीर से सीजफायर खत्म करने का ऐलान किया था। उन्होंने सुरक्षाबलों को आदेश दिया था कि घाटी में आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन शुरू करें। राजनाथ सिंह ने ये ऐलान करते हुए कहा था घाटी में शांति के लिए हमने ये ऐलान किया था। रमजान के पवित्र महीने में लोगों को तकलीफ न हो इसलिए केंद्र सरकार ने ये निर्णय शेष पृष्ठ 11 पर

पृथ्वी का अमृत गाय का दूध

श्री राधेश्याम लोहिया

गाय का दूध पृथ्वी का सर्वोत्तम आहार है। इसे मृत्यु लोक का अमृत कहा गया है। मनुष्य की शक्ति एवं बल को बढ़ाने वाला गोदुग्ध–जैसा दूसरा कोई श्रेष्ठ पदार्थ इस त्रिलोकी में नहीं है। देवकार्य तथा औषध के रूप में इसका विशेष रूप से उपयोग होता है। पञ्चमृत बनाने में इसका अनुपात सर्वाधिक रहता है। गाय का दूध पीला तथा स्वर्ण–जैसे गुणों से युक्त होता है। इसमें विटामिन 'ए' पाया जाता है। गाय का दूध जीर्णज्वर, मानसिक रोग, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, गुल्म, रक्तपित्त और योनिरोग आदि में उत्तम प्रयोज्य है।

प्रतिदिन गाय के दूध के सेवन से अनेक प्रकार के रोग यूँ ही दूर हो जाते हैं एव वृद्धावस्था का विशेष प्रभाव नहीं होने पाता। इसके सेवन से शरीर में तत्काल शक्ति–स्फुरण होने लगता है। एलोपैथी दवाओं, रायायनिक खादों तथा प्रदूषण आदि के कारण हवा, पानी एवं आहार के द्वारा शरीर में जो विष एकत्रित होता है, उसे नष्ट करने की शक्ति मात्र गोदुग्ध में है। गाय के दूध से बनी मिठाईयों की अपेक्षा अन्य पशुओं के दूध से बनी मिठाइयाँ जल्दी बिगड़ जाती हैं।

गाय को शतावरी खिलाकर उस गाय के दूध पर मरीज को रखने से (क्षयरोग) मिटता है। गाय के दूध में दैवी–तत्त्वों का निवास है। विशेष रूप से गोदुग्ध में तेजस्तत्त्व अधिक एवं पृथ्वी तत्त्व कम होने के कारण व्यक्ति प्रतिभासम्पन्न होता है और उसकी ग्रहण–शक्ति बढ़ती है, साथ ही ओज की वृद्धि होती है, बुद्धि निर्मल बनती है एवं विचार सात्त्विक बनते हैं। इस दूध में विद्यमान 'सेरीब्रोसाडस' तत्त्व मस्तिष्क एवं बुद्धि के विकास में सहायक है। केवल गाय के दूध में ही तत्त्व है। जो कि अणुविकिरणों का प्रतिरोधक है। 'रशियन' वैज्ञानिक गाय के घी–दूध से 'एटम बम' के अणुकणों के विष का शमन करने वाला मानते हैं, उस दूध में रासायनिक तत्त्व नहीं के बाराबर होने के कारण उसको अधिक मात्रा में सेवन करने से **शेष पृष्ठ 11 पर**

श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

भगवान शिव के गले में नागदेवता सदैव बिराजमान रहते है। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के बारे में तीन स्थान एवँ कथाएँ बताई जाती है। जिसमें आंध्र प्रदेश के औंध नागनाथ, अल्मोड़ा के वासुकीनाथ महादेव

एवँ सौराष्ट्र के द्वार का स्थित नागेश्वर का समावेश होता है। आओ, ज्योतिर्लिंग की पृष्ठभूमि में समुद्र मंथन की कथा का दर्शन करें। परस्पर युद्ध में लिप्त देवो–असुरों की शक्ति जब क्षीण होने लगती है तब सब साथ मिलकर समुद्र मंथन करते है। समुद्रमंथन से उत्पन्न दैवी एवँ भौतिक संपदा के आंबटन क्षमता अनुसार देवों ओर दैत्यों में होता रहता है। परंतु जब हलाहल विष निकलता है तब सब मुँह फेर लेते है। विश्व के कल्याण के लिए भगवान शिव उस हलाहल विष को कंठ में धारण करते है। जिससे भगवान का कंठ नीला होता है और नीलकंठ के नाम से पूजे जाते है। उसके पश्चात उत्पन्न हुए अमृत से देवों को अमरत्व मिलता है, ऐसी कथा है। समुद्रमंथन बड़ा ही रूपकात्मक आख्यान है। इसका आधुनिक संबंध देखें तो क्षीर समुद्र हमारी सामुदायिक संपदा (Collectivity Potential) का प्रतिक है। मेरु पर्वत प्रबल आत्मशक्ति (Will Power) एवँ वासुकीनाग ईच्छा (Desire) के बोधक है। किसी योजना के क्रियान्वयन में जब बड़ा अवरोध (विष–Posion) उत्पन्न होता है तब उसका निवारण शिव सदृश महात्मा (Leader) अवश्य करते है और समाज को सर्वश्रेष्ठ फल (अमृत) प्रदान करते है। आइए, करुणासागर भगवान शिव की कृपा पाकर हमारे पृथ्वी एवँ पर्यावरण का समुचित उपयोग करें एवँ मानव सभ्यता के कल्याण के लिए प्रवृत्त हों।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आप–अपने समय का प्रबन्धन ठीक से करें तभी हर कार्य को समय से पूरा कर पायेंगे। अत्यधिक मीठी चीजों का सेंवन न करें अन्यथा कोई पुराना रोग सक्रिय होने की आशंका है। अपने छोटों से अत्यधिक सलाह मशविरा न करें वरना लोग आपको तवज्जों नहीं देंगे।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोग अधेंरे व आपात स्थितियों से बचने का प्रयास करें इससे आप–अपने को अधिक स्वस्थ्य और उन्नति की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत करेंगे। नयें कार्यो को करने में हीला–हवाली न करें। अधिक वार्तालाप में किसी से समबन्ध खराब होने की सम्भावना है।

मिथुन : व्यवहारिक दृष्टिकोण से यह सप्ताह आपके जीवन में ऐसा मोड़ लाने वाला है जिससे आपकी प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। पारिवारिक चिन्तायें आपको घेरे रहेंगी परन्तु परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। कुछ कार्य स्वतः बन जाते है।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोगों की अपरिचितों से भेंट होगी, जो भविष्य में आपकी उन्नति में सहायक सिद्ध होंगे। आगामी समय आपके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि कार्य अनुकूल ढ़ग से सफल होंगे। छात्रों को अपने मनोकूल कार्य करने की आवश्यकता है।

सिंह : आप–अपनी वाणी से कोई ऐसी बात न कहें जिससे मान–सम्मान में कमी आये और बाद में आपको पछताना भी पड़े। महिलायें इस सप्ताह समझौते आदि के कागजों पर ध्यान से हस्ताक्षर करें अन्यथा बैठे–बिठाये मुसीबत मोल लेनी पड़ सकती है।

कन्या : इस सप्ताह आप–अपने दिमाग पर नकारात्मक विचारों को हावी न होने दे क्योंकि आगामी समय आपके लिए लाभकारी प्रतीत होगा। कार्यो के प्रति संवेदनशीलता बनायें रखें। महिलायें अनायास कार्यो में अपना समय खराब न करें।

तुला : बेरोजगार लोगों के लिए यह सप्ताह नयें अवसर लेकर आयेगा। विरोधियों कें प्रति कड़ा रूख अपनाना ही बेहतर रहेगा अन्यथा आप–अपने कार्यो को भलीभांति नहीं कर पायेंगे। अपने और परायें में अन्तर समझना अति आवश्यक है। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी।

वृश्चिक : इस सप्ताह आपके कार्यो में बाधायें तो आयेगी परन्तु डटे रहने पर सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ शारीरिक उर्जा में कमी होने के फॅलस्वरूप आप चिन्तित रहेंगे। अनावश्यक खर्चो में नियन्त्रण करने में आप कामयाब होंगे। जीवन साथी के सम्बन्धों में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

धनु : धार्मिकता एक निजी और व्यक्तिगत घटना है। वह तो ठीक प्रेम के समान है जिसे संगठित नहीं किया जा सकता है। जिस क्षण तुम सत्य अथवा प्रेम की बात करते हो, तुम उनकी हत्या कर देते हो। संगठन का कार्य आप बहेतर तरीके से कर सकते है।

मकर : जीवन साथी के मध्य शान्ति हो सकती है, परन्तु आप–अपने हरकतों पे काबू करने का प्रयास करें। नैतिकता के कार्यो में आप बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे जिससे आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव आयेगा। रोजी व रोजगार में किया गया निवेश लाभप्रद प्रतीत होगा।

कुम्भ : इस सप्ताह आपको ऐसा व्यक्ति खोजना पड़ेगा जो आपके साथ कदम से कदम मिलाकर साथ चल सके जिससे आपके आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी। यदि आप–अपने उत्तराधिकारी की खोज कर रहें है तो सोंच–समझकर ही निर्णल लें तो बेहतर रहेगा।

मीन : इस सप्ताह आप मानसिक रूप से व्यथित रहेंगे। यह आपके जीवन में बड़ी बात है। जो भी इच्छायें आपके मन में है, उन्हे पूर्ण करने के लिए योजना बनाकर कार्य करना आरम्भ कर दें। इस सम्बन्ध में आपको शीघ्र ही शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

तदित्यनभिसन्धाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्र विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः।।

तत् अर्थात् 'तत्' नाम से कहे जाने वाले परमात्मा का ही यह सब है– इस भाव से फल को न चाहकर नाना प्रकार की यज्ञ, तपरूप क्रियाएँ तथा दानरूप क्रियाएँ कल्याण की इच्छा वाले पुरुषों द्वारा की जाती हैं।।२५।।

सदभावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।।

'सत्'–इस प्रकार यह परमात्मा का नाम सत्यभाव में और श्रेष्ठभाव में प्रयोग किया जाता है तथा हे पार्थ! उत्तम कर्म में भी 'सत्' शब्द का प्रयोग किया जाता है।।२६।।

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।।

तथा यज्ञ, तप और दान में जो स्थिति है, वह भी 'सत्' इस प्रकार कही जाती है और उस परमात्मा के लिये किया हुआ कर्म निश्चर्यपूर्वक सत्– ऐसे कहा जाता है।।२७।।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्ततं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह।।

हे अर्जुन! बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान एवं तपा हुआ तप और जो कुछ भी किया हुआ शुभ कर्म है– वह समस्त 'असत्'–इस प्रकार कहा जाता है; इसलिये वह न तो इस लोक में लाभदायक है और न ही मरने के बाद ही।।२८।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 18 जुलाई से 24 जुलाई 2018 तक

अध्यक्षीय

पिसती दिल्ली की जनता

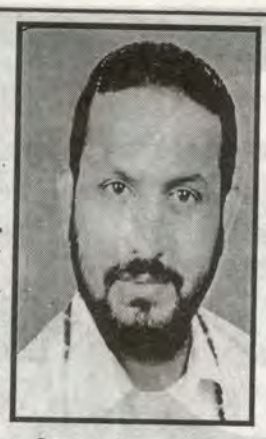

दो पाटों के बीच पिसना किसे कहते हैं, यह दिल्ली की जनता से बेहतर कौन समझ सकता है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के पन्ने दिल्ली पर कब्जे की लड़ाई से भरे पड़े हैं। दिल्ली के नाम और शासक बदलते रहे, लेकिन आजादी मिलने और लोकतंत्र स्थापित होने के बाद भी यहां की राजनीति का चरित्र नहीं बदला। यह लोकतांत्रिक राजनीति का कितना विकृत चेहरा है कि एक निर्वाचित मुख्यमंत्री को अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठना पड़ रहा है। लेकिन उसकी सुनवाई नहीं हो रही। अलबत्ता इस पर राजनीति खूब हो रही है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल अपने तीन मंत्रियों के साथ उपराज्यपाल के आवास पर धरने पर बैठे थे। बड़े दबाव में उन्होंने अपना धरना आखिर समाप्त कर दिया। सरकार और अधिकारियों में सुलह हो गयी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीति आयोग की बैठक में न्यू इंडिया २०२२ का विजन कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ साझा कर रहे थे, लेकिन इस विजन में दिल्ली कहां है, यह पता नहीं। अरविंद केजरीवाल को भी इस बैठक में शामिल होना था, लेकिन अपनी हड़ताल के कारण वे बैठक में नहीं गए और यह भी कहा कि ऐसी बैठकों में प्रधानमंत्री उनकी ओर देखते भी नहीं हैं। श्री मोदी और श्री केजरीवाल दोनों अलग-अलग दलों के हैं, उनकी राजनीति के तौर-तरीके भी अलग हैं। लेकिन दोनों को इस देश की जनता ने ही चुनकर भेजा है और यह बात इन दोनों को याद रखनी चाहिए। प्रधानमंत्री किसी मुख्यमंत्री से बात न करे या किसी मुख्यमंत्री को हड़ताल पर बैठना पड़े, यह लोकतंत्र की मयार्दा के अनुरूप तो कतई नहीं है। लेकिन अपने-अपने अहंकार में नरेन्द्र मोदी और अरविंद केजरीवाल दोनों लोकतंत्र और जनता का अपमान ही कर रहे हैं। अरविंद केजरीवाल की राजनीति में हड़ताल पुराना और आजमाया हुआ हथियार है। लेकिन अब वे मुख्यमंत्री हैं, दिल्ली की सरकार हैं, ऐसे में एकाध दिन का विरोध समझ में आता है, पर एक हफ्ते तक अगर वे धरने पर बैठेंगे और अपनी मांगें पूरी करने का दबाव बनाएंगे, तो यह तरीका सही नहीं लगता। उन्हें दूसरे विकल्पों पर भी विचार करना चाहिए। दूसरी ओर केन्द्र सरकार द्वारा नियुक्त उपराज्यपाल मुख्यमंत्री से मिलने से इंकार करे, यह और अधिक आपत्तिजनक बात है। मुख्यमंत्री केजरीवाल की शिकायत है कि आईएएस अफसर हड़ताल पर हैं जिसके चलते दिल्ली सरकार की कई योजनाएं रुकी हुई हैं। दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने और आप सरकार की महत्वाकांक्षी योजना घर तक राशन पहुंचाने को भी मंजूरी दिए जाने की मांग केजरीवाल ने की है। फरवरी में दिल्ली के मुख्य सचिव अंशु प्रकाश से हुई कथित तौर पर मारपीट के विरोध में आईएएस एसोसिएशन ने हड़ताल का आह्वान किया था। हालांकि अधिकारियों का कहना है कि वे काम पर जाते हैं, जबकि आप सरकार कह रही है कि वे न काम पर आते हैं, न उनकी बातें सुनते हैं। दिल्ली में तैनात प्रशासनिक अधिकारियों से जुड़े कानून बनाना, उनकी पदोन्नति और तबादले करने का अधिकार मुख्यमंत्री से ज्यादा उपराज्यपाल और केन्द्रीय गृह मंत्रलय को है। दरअसल १९८७ में गठित सरकारिया समिति की सिफारिशों के आधार पर १९९१ में ६९वां संविधान संशोधन किया गया और मेट्रोपोलिटन काउंसिल की जगह दिल्ली विधानसभा को स्थापित कर दिया गया। इस संशोधन ने संविधान में अनुच्छेद २३६ एए और २३६ एबी भी जोड़ दिए गए थे। अनुच्छेद २३६ एए की उपधारा ३ ए के अनुसार दिल्ली विधानसभा राज्य सूची या समवर्ती सूची में मौजूद किसी भी विषय पर कानून बना सकती है लेकिन उसे कानून-व्यवस्था, पुलिस और जमीन से संबंधित विषयों पर कानून बनाने का अधिकार नहीं है। इसके अलावा प्रशासनिक अधिकारियों पर भी उसका कोई बस नहीं है। बहरहाल निर्वाचित सरकार और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच इस तरह की लड़ाई का खामियाजा दिल्ली की जनता को उठाना पड़ता है , क्योंकि कई जरूरी फैसलों पर काम अटका हुआ है। मोदीजी दिल्ली चुनाव में भाजपा की हार को अभी भूले नहीं होंगे और अनेक राज्यों की तरह दिल्ली की सत्ता हासिल करने की उनकी ख्वाहिश होगी। लेकिन क्या इसके लिए जनहित को दांव पर लगाना सही है। ऐसा कौन सा मसला है, जो बातचीत से सुलझ नहीं सकता।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

बीच मंझधार में छोड़ दिया जनता का साथ

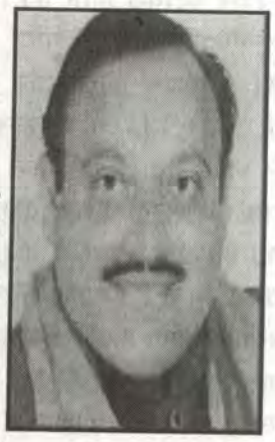

जम्मू-कश्मीर एक बार फिर राज्यपाल के हवाले हो गया है। २०१४ के आखिरी में वहां बेमेल गठबंधन की सरकार बनी थी। आदित्यनाथ योगी के शब्दों में कहें तो केर-बेर का संग हुआ था। विधानसभा चुनावों में पीडीपी को २८ सीटें, भाजपा को २५, नेशनल काफ्रेंस को १५ और कांग्रेस को १२ सीटें ही मिली थीं। सरकार गठन के लिए ४४ के जादुई आंकड़े तक पहुंचने के लिए दो दलों का हाथ मिलाना जरूरी हो गया था। कांग्रेस मुक्त भारत की चाह और राज्यों पर अपनी सत्ता कायम करने के लालच में भाजपा को धुरविरोधी पीडीपी के साथ गठजोड़ करने से परहेज नहीं हुआ। तब मुफ्ती मोहम्मद सईद मुख्यमंत्री बने, २०१६ में उनकी मृत्यु के बाद जब महबूबा मुफ्ती उनकी उत्तराधिकारी बनीं तो भी गठबंधन जारी रहा। हालांकि तब थोड़ी असमंजस की स्थिति थी और ऐसा लग रहा था कि भाजपा-पीडीपी साथ नहीं रहेंगे, लेकिन सत्ता का आकर्षण इतना अधिक था कि सारी झिझक किनारे कर दी गई। भाजपा और पीडीपी दोनों ने अपनी सत्ता की ख्वाहिश तो पूरी कर ली, लेकिन इन तीन सालों में जम्मू-कश्मीर की हालत बद से बदतर हो गई। आतंकवाद की घटनाएं बढ़ीं, पाकिस्तान के हमले बढ़े, नौजवानों के एक बड़े वर्ग पर पत्थरबाज का लेवल चस्पां हो गया, सुरक्षा बलों पर दो तरफा हमले हुए, तो आम नागरिक भी अपने ही राज्य में संदेह के दायरे में आ गया। लेकिन भाजपा और पीडीपी दोनों ने जम्मू-कश्मीर में हुए इस पतन की जिम्मेदारी से हाथ खींच लिए। यहां के हाल इतने बुरे हो गए हैं कि पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ में जम्मू-कश्मीर में मानवाधिकार उल्लंघन की बात पर भारत पर ऊंगली उठी। भारत सरकार चाहे कितने ही कड़े शब्दों में उसका जवाब दे दे, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी किरकिरी तो हो ही गई। भारत में चीन के राजदूत ल्यू झाओहुई ने कश्मीर मसले पर एक त्रिपक्षीय वार्ता का सुझाव दिया। यानी भारत, पाकिस्तान और चीन इस मसले पर बैठकर बात करें। भारत ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि पाकिस्तान के कहने पर ही चीन ने ऐसा प्रस्ताव रखने की हिम्मत दिखाई है। पहले अमेरिका कश्मीर मामले में दखल देना चाहता था, अब चीन भी शामिल हो गया है। और इसके लिए हम केवल पाकिस्तान को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। कश्मीर के हालात आज जैसे हैं, उसकी पूरी जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकार की बनती है, लेकिन अफसोस कि पीडीपी और भाजपा दोनों ने कश्मीर पर अपना राजनीतिक प्रयोग किया और वह सफल नहीं दिखा तो उसे मंझधार में छोड़ दिया। पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर में जो घटनाएं हुई हैं, उन पर तमाम इनपुट लेने के बाद प्रधानमंत्री मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह से परामर्श लेने के बाद निर्णय लिया है कि गठबंधन सरकार में चलना संभव नहीं होगा, कुछ ऐसे शब्दों के साथ जम्मू-कश्मीर के भाजपा प्रभारी राम माधव ने गठबंधन खत्म करने का ऐलान कर दिया। सवाल यह है कि कश्मीर में अभी जैसी स्थिति वह कल-परसों में नहीं बनी है, बल्कि साल-दर-साल बिगड़ी है, फिर अब जाकर भाजपा को यह अहसास क्यों हुआ कि पीडीपी के साथ सरकार चलाना संभव नहीं है। क्या इसलिए कि आम चुनाव में एक साल ही बचा है और भाजपा को फिर से जनता के पास जाना पड़ेगा, कश्मीर के बारे में जवाब देना होगा और वह संतोषजनक जवाब देने की स्थिति में नहीं है। वह नहीं बता सकती कि नोटबंदी के बाद भी आतंकवाद पर रोक क्यों नहीं लगी। युवाओं के हाथ कलम-किताबें उठाने की जगह पत्थर क्यों उठाने लगे, कब तक वीर रस की बातें करके अपने सैनिकों को सरकार शहीद होने देगी। कठुआ कांड पर धर्म की राजनीति क्यों हुई, कुछ यही हाल पीडीपी का भी है, जो कई मुद्दों पर भाजपा से एकदम अलग राय रखती है, लैकिन फिर भी भाजपा के दबाव में काम करती रही। पत्थरबाजों से निपटने की नीति हो या सीजफायर का ऐलान और बाद में उसे खत्म कर आपरेशन आल आउट फिर से चालू करना, इन सब में महबूबा मुफ्ती अधिकार विहीन मुख्यमंत्री बनी रहीं और केंद्र की मर्जी ही कश्मीर में चली। बहरहाल अब एक बार फिर जम्मू-कश्मीर में राज्यपाल का शासन है यानी केंद्र अपनी मनमर्जी चलाने के लिए यहां पूरी तरह स्वतंत्र हो गया है। निश्चित ही अब आतंकवाद से निपटने के नाम पर सैन्य शक्ति और सख्ती दोनों दिखाई जाएगी। जिसका दूरगामी लाभ मिलेगा, इस पर संशय है। क्योंकि यह कोई सैन्य समस्या कम, राजनैतिक समस्या अधिक है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

कोलेस्ट्रोल और स्वास्थ्य

✍ डॉ. ए.के. चतुर्वेदी

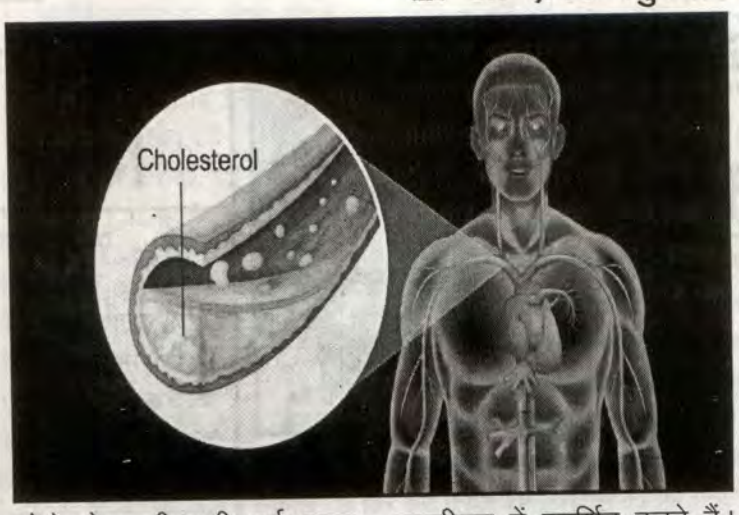

आजकल कोलेस्ट्राल के नाम से सभी परिचित हैं। चिकनाई में उपस्थित जटिल कार्बनिक यौगिक कोलेस्ट्रोल कहलाता है। कोलेस्ट्राल स्ट्रोल होता है। स्ट्रोल रवेदार स्ट्रोयड होता है। जिसमें एल्कोहालिक समूह पाया जाता है। सर्वप्रथम कोलेस्ट्राल मनुष्य के गॉलस्ट्रोन, जो बाइलनलिका में जमा होता है, से प्राप्त किया गया। कोलेस्ट्राल शब्द ग्रीक भांषा का है। ग्रीक भाषा में बाइल को कोल कहते है। बाइल गॉलस्ट्रोन से प्राप्त होता है और एल्कोहलिक समूह पाया जाता है। इस कारण स्ट्रोन बन गया। कोल और स्ट्रोल को मिलाकर कोलेस्ट्राल शब्द बना। भोजन से आँतों द्वारा कोलेस्ट्राल शोषित किया जाता है। कोलेस्ट्राल रंगहीन, रवेदार, ओप्टीकल एक्टिव ठोस पदार्थ है। इसका गलनांक १८६ ग्रिडी से. और स्पेसिफिक रोटेशन (+) ३६ डिग्री सेटी. होता है। कोलेस्ट्राल रंगीन क्रियाए प्रदर्शित करता है। ये क्रियाएँ इस प्रकार है (१) सालकोवास्की क्रिया (Salko Washi reaction) कोलेस्ट्राल को क्लोरोफार्म में घोलते हैं। इसमें सान्द्र सल्फ्यूरिक अम्ल मिलाने पर क्लोरोफार्म सतह लाल रंग की हो जाती है। (२) लिबरमेन बुरचर्ड क्रिया (Libermann-Burchard reaton) कोलेक्ट्राल को क्लोरोफार्म में घोले लें, फिर एसीटिक एनहाइड्राइड और सान्द्र सल्फ्यूरिक अम्ल मिलाने पर क्लोरोफार्म सतह हरे रंग की हो जाती है।

कोलेक्ट्राल मनुष्य के गॉलस्टोन, मस्तिष्क, स्पाइन कोर्ड, बसा में पाया जाता है। कोलेक्ट्राल को प्राप्त करने के लिए स्रोत की ईथायल एल्कोहल में घोल तेते है। इस विलयपन को सेन्ट्रोफ्यूज करते हैं। इसमें एल्कोहोलिक डाईजीटोनिन (Digitonin) विलयन मिलाते है। कोलेक्ट्रोल डाईजीटोनाइड का अवक्षेप प्राप्त होता है। अवक्षेप को हम छानकर पृथक कर लेते हैं। फिर डाईमिथायल सल्फोसाइनाइड में घोलते हैं। भाप वाष्प पर गर्म करते हैं। कोलेस्ट्रोल क्रिस्टल के रूप में पृथक हो जाता है।

जीवन शैली और खानपान में परिवर्तन होने से रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ रही है। कोलेस्ट्रोल की बढ़ी हुई मात्रा धमनियों में जमा होती रहती है जिससे रक्त पहरवहन में अवरूद्धता से हृदयाघात होता है। इसलिए कोलेस्ट्रोल का बढ़ना घातक माना जाता है। इसी कारण आज कोलेस्ट्रोल के प्रति सजगता बढ़ गयी हैं

कोलेस्ट्रोल के विश्लेषण में तीन अवयन पाये जाते हैं। पहला अवयव कम घनत्व वाली लिपोप्रोटीन कहलाता है। इसे एलडीएल में प्रदर्शित करते हैं। इसकी मात्रा बढ़ाने से धमनियों में अवरुद्धता उत्पन्न होती है, जो हानिकारक होती हैं इस कारण इसे बुरा कोलेस्ट्रोल कहते हैं। दूसरे अवयव उच्च घनत्व वाली लियोप्रोटीन कहलाता है। इसे एच. डी.एल. से प्रदर्शित करते हैं। इसका मुख्य कार्य रक्त में उपस्थित एलडीएल की मात्रा को कम करना है। इसे अच्छा कोलेस्ट्रोल भी कहते है। तीसरा अवयव ट्राई ग्लिसराइड कहलाता है। यह रक्त की चिकनाई को प्रदर्शित करता हैं इसकी अधिक मात्रा हानिप्रद होती है।

कोलेस्ट्रोल की अधिक मात्रा हृदय रोगों को उत्पन्न करती है। बढ़ी मात्रा कमी घातक हो जाती है। हॉवर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के सर्वेक्षण के अनुसार खाने मं सृतप्त वसा के स्थान पर कार्बोहाइड्रेड लेने से १५ प्रतिशत असंतृत्व वसा लेने से ३५ प्रतिशत हृदय रोगों की सम्भावना कम हो जाती है।

कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम करने के लिए आवश्यक है कि ऐसे पदार्थों का सेवन न करें जिनमें संतृत्प वसा होती है?। संतृत्प वसा यकृत को उत्तेजित कर कम घनत्व वाली लिपोप्रोटीन का निर्माण करती हैं यह हानिकारक होती है। इसी प्रकार ट्रान्स फेटो अम्ल भी हानिप्रद होते है। कोलेस्ट्रोल की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए तली हुई वस्तुओं, संतृप्त वसा वाले तेलों का सेवन नहीं करना चाहिए। मक्खन का सेवन भी हानिकारक होता है। खाने में सरसों या मूँगफली के तेल का उपयोग करना ही हितकारी होता हैं चिकनाईसहित दूध सेवन करना लाभकारी होता हैं। धूम्रपान करना हानिकारक है। धूम्रपान से उच्च घनत्व वाली लियोप्रोटीन है। मानसिक दबाव होने से रक्तचाप बढ़ता है। यह हानिकारण्क है।

डॉ. रेडवर्ग के अनुसार उच्च घनत्व घनत्व वाली लिप्रोटीन की मात्रा खाने से नहीं बढ़ती है। इसके लिए व्यायाम आवश्यक होता हैं व्यायाम ट्राई ग्लिसराइड और रक्त वसा को कम करता है। इंग्लैंड के जनरल ऑफ मेडीसिन के अनुसार प्रतिदिन चार चाय की चम्मच भर सोयाबीन खाने से कम घनत्व वाली लिपोप्रोटीन और ट्राईग्लिससाइड की मात्रा कम हो जाती है। परिक्षाओं द्वारा प्रमाणित हो चुका है। कि प्रतिदिन विटामिन ई की आईयू मात्रा लेने से रक्त में कोलेक्ट की मात्रा कम हो जाती है। भोजन में जई, जौ, सेम मटर साइट्रस फल, चावल की भूसी शेष पृष्ठ 11 पर

कैंसर तक में लाभकारी है किशमिश

✍ शिवचरण चौहान

किशमिश व मुनक्का, अंगूरों को धूप में सुखाकर प्राप्त किये जाते है। मुनक्का को भारत में दाख कहा जाता है। संस्कृत में दाख के लिए द्राक्षा शब्द का प्रयोग हुआ है और इसे एक विशिष्ट मेवा तथा आयुर्वेद में दवाओं के निर्माण में उपयोगी बताया गया है। आज कैलीफोर्निया की किशमिश पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। किशमिश बाजार में पचास प्रतिशत कब्जा कैलीफोर्निया का है। प्राचीन मिश्र (इजिप्ट) में किशमिश का उल्लेख मिलता है। अनुमान है कि जहाँ–जहाँ भी अंगूर की बेलें लहराती होंगी और वहां कुछ अंगूर तोड़ने से रह गये होंगे, जो तेज धूप में सुंख गये होंगे वही किशमिश कहलाये। अंगूर के फल से किशमिश बनाने का जो तरीका पहले अपनाया जाता था, प्रायः आज भी वही प्रचलित है। मिट्टी के घरों में ताड़पत्रों, केले के पत्तों या चपटी छाजन पर अंगूर, तांबई रंग के हो जाते हैं और उनमें झुर्रियाँ पड़ जाती है। यही किशमिश है। धूप में करीब १० दिन में अंगूर सूखकर किशमिश बन जाता है, किन्तु इस दौरान यदि पानी बरस गया तो अंगूर सड़ जाते हैं। अंगूर की खेती प्रायः वहीं ज्यादा सफल होती है, जहां अंगूर धूप में सुखाये जा सकते है,,

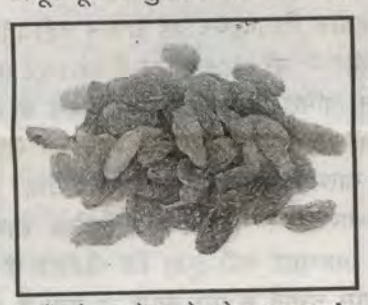

वहाँ सोडा के गाढ़े घोल या अन्य क्षारीय द्रवों में अंगूरों को डुबोया जाता है और अंगूरों में छेद होने पर उन्हें कृत्रिम रूप से गर्मी देकर सुखाया जाता है।

सिकन्दरिया में पाया जाने वाला अंगूर किशमिश बनाने के लिए अच्छा माना जाता है। इसे मस्कत या मलागर किशमिश कहते हैं। यूरोप में अनेक देशों के बाजारों में मलागर किशमिश मशहूर है। भारत में चमन किशमिश लोकप्रिय है। इंसा से ४०० वर्ष पूर्व अर्मीनिया की किशमिश बहुत मशहूर थी। किशमिश बनाने की कला वहां के लोग किसी को बताते नहीं थे। बाद में स्पेन, इराक तथा कैलीफोर्निया में भी किशमिश का उत्पादन होने लगा। आज कैलीफोर्निया किशमिश का उत्पादन होने लगा। आज कैलीफोर्निया का मौसम, किशमिश सुखाने के लिए आदर्श मौसम है। अमेरिकी किशमिश मस्कत जाति के अंगूरों में १८५१ में प्राप्त हुई थी। बीज रहित अंगूर भी फसल प्राप्त करने में एक अंग्रेज विलियम टरमाल सफल रहा। इंग्लैंड की सैकरामेटी, दी ाटी में टामसन में मस्कत अंगूर तथा इंग्लैंड की डीकोवर्ली नस्ल की अंगूर बेलों की कल में बाँधकर बीजरहत अंगूर की तीन किस्में प्राप्त की। नदी मे बाढ़ आज जाने से दो किस्में तो जड़ सहित बह गयीं, किन्तु एक बची रही जो आज भी टामसन बीजरहित अंगूर के नाम से विख्यात है। कैलीफोर्निया मे १००० टन से अधिक अंगू रोज तोड़ा जाता है। सुल्ताना, अंगूर श्वेत रंग का छोटे आकार का होता है। यह भी बीजरहित है और यूरोप में लोकप्रिय है। यह थोड़ा खट्टे स्वाद वाला होता है, जो केक के बनाने में ज्यादा प्रयुक्त होता है। किशमिश को मेवा कहा गया है और गुझिया, रसगुल्ला, बर्फी, लड्डू पेड़े सहित सभी मिठाइयों तथा आइसक्रीम, दालमोठ आदि में प्रयोग किया जाता है।

किशमिश में खनिज तत्वों का बाहुल्य होता है। करीब ६५ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है, प्रोटीन भी होता है तथा शर्करा भी काफी होती है। खाने में बेहद स्वादिष्ट किशमिश पेट साफ करता है तथा भूख बढ़ाता है, कब्जनाशक, रक्तवर्द्धक तथा कैंसर को खत्म करने वाला किशमिश नेत्र ज्योति भी बढ़ाता है। मुख शुद्ध करने तथा दाँतों को स्वच्छ रखने में भी किशमिश बेजोड़ है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इटली की सेना के जवान अतिसार रोग से ग्रस्त हो गये थे। एक दिन सेना को अंगूरों के बागों में ठहराना पड़ा। उस दिन सैनिकों ने पके व सूखे अंगूर खूब खाये और आश्चर्य कि अगले दिन सिपाहियों का अतिसार रोग आश्चर्यजनक ढंग से गायब हो गया था।

कामनाओं का अथाह सागर है 'मन'

रश्मि अग्रवाल

मन क्या है? कामनाओं का अथाह सागर है, जिसमें सर्वथा इच्छाओं की, कामनाओं की और महत्वाकांक्षाओं की लहरें उठा करती हैं। एक लहर पूरी हुई कि दूसरी पैदा हो गई। एक लहर गिरी कि दूसरी लहर उठ आई। मन के सागर को खाली करना कठिन ही नहीं असम्भव है। 'गीता में' भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि इंद्रियों में मन मैं ही हूँ। मन विलक्षण शक्ति पूंज है। शास्त्रकारों ने मन को मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण बताया है। मन अत्यन्त चंचल है इसलिए वश में करना अत्यन्त कठिन सा होजाता है जबकि मनुष्य स्वेच्छाचारी है वो परम्पराओं, मर्यादाओं, वर्जनाओं और दायित्व बोध से बंधनों में बंधा हुआ है। जिसके अंतर्गत हम संसार के लौकिक सुखों की ओर भागते हैं। पर आचार्य चाणक्य के अनुसार मन को अपना मित्र बनाएँ। उसे निरन्तर विचार निमग्न रखें। एक विचार की अन्य विचारों से तुलना करते रहें और आवश्यकता के आधार पर उसमें कांट–छांट करते रहें। जिस तरह मित्र को हमेशा नेक सलाह दी जाती है, उसी तरह अच्छे विचारों को प्राथमिकता दें।

व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक है, मन की एकाग्रता की और एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही इंद्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त की जा सकती है।

हम जागरूक हैं और समझते भी हैं कि क्या सही है? हमारा कुछ करना, स्वयं को व दूसरों के जीवन को खुशियों से भर देगा लेकिन हम डर जाते हैं, मन की भी नहीं सुनते और झुंझलाते हैं, क्रोध करते हैं इसलिए तनाव ग्रस्त रहते हैं। जबकि संसार का जो विज्ञान है, वह केवल बाहरी खोज करता है। पृथ्वी से आसमान के सितारे कितनी दूर हैं, सूर्य कितना ठन्डा हो रहा है, पृथ्वी से चांद, सूरज की दूरी कितनी है, हवाई जहाज की रफ्तार वायु से तेज गति से तेज कैसे हो? इन सभी को नापने और नई–नई खोज करने में लगा है पर यह सब बाहरी उड़ान है। कोई चीज कैसे बनी, सांसारिक वैज्ञानिक इसी की खोज में लगा रहता है। यदि आप किसी वैज्ञानिक को गुलाब का फूल भेंट करो तो वो उसकी सुन्दरता को तो निहारेगा लेकिन इस खोज में लग जायेगा कि इसमें सुगंध किस कारण है? इसका रंग लाल, पीला कैसे और क्यों है? इसके साथ कांटे देखकर हमारा मन खराब हो जायेगा वहीं ऋषि–मुनि कहते हैं कि ये सब प्राकृतिक है, ये कांटे ही हमारा सुरक्षा कवच है, ये ही तो हमें अच्छाई–बुराई से लड़ना सिखाते हैं। ईश्वर ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में अपार क्षमता और योग्यता संग्रहित की है। इसलिए कोई भी कार्य हमारे लिए असम्भव नहीं पर इसके लिए मन का संतुलन आवश्यक है।

क्योंकि ये ही हमें स्पष्ट दृष्टिकोण देता है जिसमें हम राग, द्वेष को छोड़कर जीवन को सकारात्मक रूप में देखने लगते हैं। परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का जीवन संवार लेने का अवसर देता है। हमारा मन व कर्म ही वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम अपना भाग्य लिख सकते हैं, इसके लिए जब तक आप मन से पूरी तरह आश्वस्त न हो जाएँ कि आपके द्वारा किया गया काम सही है, तब तक आपको संतुष्टि नहीं मिलेगी। सफल होना यानि नाम और पैसा होना, इनका मिलना यानि खुशियों से मिलना और प्रत्येक समस्या का हल जरूरी तो नहीं। पर अमेरिकी अभिनेता व हास्य कलाकार जिम कैरी ऐसा नहीं मानते वे कहते हैं, हर किसी को अमीर और लोकप्रिय होना चाहिए। हर वह चीज या कार्य करना चाहिए, जिसकी चाहत है, तबही वे जान पायेंगे कि यह समाधान नहीं है। जैसे ओशो ने भी कहा है कि हम जो भी करते हैं, वह मन का पोषण है, मन को हम बढ़ाते हैं, मजबूत करते हैं। हमारे अनुभव, हमारा ज्ञान, हमारा संग्रह, सब हमारे मन को मजबूत और शक्तिशाली करने के लिए है इसलिए ज्ञान और लम्बे अनुभवों का खजाना जितना अधिक बढ़ायेंगे, मन के लिए उतना ही अच्छा है।

अब हम कहेंगे कि मन तो मानता ही नहीं, इसे कैसे मनाएँ, कैसे समझायें? इसका भी सरल उपाय है कि मन में जब कभी नकारात्मक विचार आएँ तो उसको रोको, गलत विचार क्यों आया इसका कारण खोजो फिर धीरे–धीरे एक ऐसी स्थिति आएगी कि आपके मन में गलत विचार आएगें ही नहीं। मन के पवित्र होने के साथ शरीर भी पवित्र हो, आपका व्यक्तित्व ऐसा हो कि आपको देखकर किसी दूसरे के मन में कुप्रभाव प्रकट न हो। सदा पवित्रता का ही प्रमाण है कि जब हम किसी साधु, संत अथवा किसी महापुरुष के पास जाते हैं और उस वातावरण की परीधि में रहते हैं, तो उसका कुछ ना कुछ प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता ही है इसलिए व्यक्ति को स्वयं के भीतर खोज करनी चाहिए। अपने मन व वाणी में सरलता, शुद्धता लानी चाहिए। कभी भी किसी भी कार्य को करने में अवरोध सामने हो लेकिन यदि वह आपका सहज, स्वभाविक कर्म है, अर्थात उस काम में आपका मन रमता हो तो उसे दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ पूर्ण करें।

तात्पर्य ये ही है कि हमें मन का दास न होकर उसको अपने वश में करना चाहिए, मन की उड़ान को स्थिर करते हुए, स्वयं के अच्छे–बुरे, लाभ–हानि, पथ–कुपथ एवं सत्य–असत्य पर चिन्तन–मनन करते हुए, जीवन की रूप रेखा बनानी चाहिए ताकि मन को भटकने का अवसर ही न मिले तबही हमारा मन सुविचारों से भरा सर्वथा हमारे साथ होगा।

डॉ० भीमराव आंबेडकर के मार्ग पर चलने का संकल्प

आंबेडकर जयंती पर नगर में विभिन्न कार्यक्रम हुए आयोजित, भाजपा, बसपा व सपा कार्यकर्ताओं ने भी मनाई जयंती, निकाली गई शोभायात्राएं जनपद में डॉ. भीमराव आंबेडकर की १२७ वीं जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई गई। जिले में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। लोगों ने भंडारे लगाए। कहीं कवि सम्मेलन हुआ तो कहीं गोष्ठी करके उनका गुणगान किया गया। लोगों ने उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

प्रतिक्रिया

१. २६–११–१९४९ को जब डॉ. आंबेडकर ने, संविधान बनाकर सौंपा था तब उन्होंने स्वयं कहा था कि यह संविधान उत्तम नहीं है क्योंकि यह मेरी सोच के अनुकूल नहीं है। मुझसे ऐसा ही संविधान बनवाया गया है।

❖ ऐसी स्थिति में उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए था।

❖ आरक्षण तो फिर भी मिलता।

❖ संविधान नेहरू की सोच, चिन्तन, मानसिकता और तुष्टीकरण की नीति पर आधारित है।

❖ आंबेडकर के मार्ग पर चलने का मतलब है कि न चाहते हुए भी दूसरे की बात मान ली जाए।

२. इस संविधान में कमियां इस प्रकार है:–

❖ धारा ३७० के हटाने की कोई निश्चित सीमा नहीं है।

❖ जाति के आधार पर आरक्षण केवल १० वर्षो के लिए था। उसे बढ़ाने का प्रावधान नहीं है फिर उसे क्यों बार–बार बढ़ाया जाता है? समान नागरिक कानून, मुस्लिमों के दबाव के आगे, नेहरू ने घुटने टेककर, नहीं बनने दिया।

❖ गोहत्या बन्दी–शराब बन्दी को राज्यों का विषय बना दिया गया।

❖ अल्पसंख्यक शब्द का, न तो अर्थ लिखा गया है, न ही उसकी व्याख्या की गई है। ऐसी हास्यास्पद और विचित्र स्थिति में भी, सभी दल अल्पसंख्यक तुष्टीकरण बढ़–चढ़ कर रहे है।

❖ धर्म निरपेक्ष शासन प्रणाली में, किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक घोषित करना, संविधान की मूल भावना के विपरीत है।

❖ अन्य धार्मिक देशों में, अल्पसंख्यक, पार्टियों में और सरकार के सर्वोच्च पदों पर चुने नहीं जा सकते है। उनके अधिकार सीमित होते हैं।

❖ संविधान में, देश विभाजन के दोषियों को, धारा–२१ तथा ३० का लाभ देकर पुरस्कृत किया गया है जबकि उन्हे तो वोट का अधिकार भी नहीं देना चाहिए था।

❖ मुगलकाल में ३०३२ मंदिरों को जर्बदस्ती मस्जिदों में बदल दिया गया था। विभाजन के बाद भी, इनके जीर्णोद्धार–पुनर्निर्माण का कोइ प्रावधान संविधान में नहीं है।

कमजोर–अदूरदर्शी–स्वार्थी नेताओं की पार्टियों के शासनकाल में, हिन्दुओं का प्रतिशत ८८ से घटकर ८० रह गया है किन्तु गिरावट को रोकने की, किसी को भी, चिन्ता नहीं है।

❖ सिख, बौद्ध, जैन अल्पसंख्यक भी माने जाने है और हिन्दू समाज के अंग भी। यह कैसी विचित्रता है?

❖ धर्म बदलने के बाद भी, अनुसूचित जाति–जनजाति के लोगों को आरक्षण का लाभ मिलना बंद नहीं होता है। क्यों?

❖ यदि सब कुछ इसी प्रकार चलता रहा तो निकट भविष्य में, देश की सत्ता मुस्लिम–ईसाई गठबंधन के हाथों में जा सकती है। तब हिन्दू पुनः परतंत्र हो सकता है।

❖ अनेकों बुद्धिजीवियों ने यह मान लिया है कि देश पर फिर मुस्लिम ही शासन करेगा। हम उनकी इस सोच की निंदा करते हैं और उनकी सोच को बदलने का प्रयास जारी रखना चाहिए।

विशेषः– संविधान सभा में मुस्लिम प्रतिनिधि तजामुल हुसैन ने कहा था कि धर्म निरपेक्ष भारत में अल्पसंख्यक शब्द स्वीकार्य नहीं हो सकता है क्योंकि यह राष्ट्रीयता के लिए घातक सिद्ध होगा। उनकी चेतावनी उचित थी जिसे स्वीकार नहीं किया गया और उसका दुष्परिणाम देश भोग रहा है।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

जम्मू कश्मीर में राष्ट्रवाद का संघर्ष

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

अंततः लगभग सवा तीन वर्ष बाद एक अनुचित व बेमेल गठजोड़ से बनी जम्मू–कश्मीर में पीडीपी व भाजपा सरकार से भाजपा ने राष्ट्रीय़ हितों को ध्यान में रखते हुए समर्थन वापस ले लिया है। वैसे भी अनेक कारणों से भाजपा इस सरकार में घुट रही थी जबकि भाजपा की राष्ट्रवाद के लिए संघर्ष सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। आपको स्मरण होगा कि २३.१२.२०१४ को जम्मू–कश्मीर के चुनाव परिणामों के आने के बाद परस्पर घोर विरोधी भाजपा व पीडीपी की दो महीने से अधिक चली वार्ता के बाद न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर १ मार्च २०१५ को यह सरकार अस्तित्व में आयी थी। इसमें कोई संदेह नही कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के शासन से जम्मू–कश्मीर के निवासी कुंठाग्रस्त हो चुके थे। संभवतः इसीलिए विधान सभा चुनावों में कश्मीर घाटी में पीडीपी व जम्मू में भाजपा को महत्वपूर्ण बढ़त मिली थी। जिससे दोनों दलों को साथ साथ आकर सरकार बनाने का अच्छा अवसर मिला। लेकिन मुफ्ती मोहम्मद ने अपनी कूटनीतिज्ञता का परिचय देते हुए भाजपा के साथ गठजोड़ करने के लिए शीघ्रता नही दिखाई। पीडीपी के तत्कालीन सर्वोच्च नेता मुफ़्ती मोहम्मद सईद ने इस साझा सरकार को बनाने में हुरयत नेता सैयद अली शाह गिलानी सहित अनेक अलगाववादी नेताओं से भी गंभीर चिंतन किया। जिससे कश्मीर घाटी की जनता को यह संदेश गया कि सरकार बनाने की विवशता में ही भाजपा का साथ लेना पड़ रहा है। उधर भाजपा जो केंद्र में पहले से ही शासन में है और अब इस सीमांत प्रदेश में भी प्रथम बार साझा सरकार बनाकर प्रदेश को राष्ट्रीय मुख्य धारा में लाने के अपने पूर्वाग्रहों के अनुसार योजनाओं को क्रियान्वित करके अपना राष्ट्रधर्म निभाने की चाह में संतुष्ट होना चाहती थी। वैसे तो राजनीतिज्ञों व राष्ट्रवादियों सहित भाजपा को भी यह आशा नही होगी कि वह इस अशांत प्रदेश की सत्ता में कभी साझेदार बनेगी? अनेक आपत्तियों के बाद भाजपा ने अपने सिद्धान्तों की चिंता न करते हुए पीडीपी से गठबंधन करके सरकार का गठन किया था। ऐसे कट्टरपंथियों से जुड़ने पर अनेक देशवासी ऐसी आत्मघाती राजनीति से क्षुब्ध थे। फिर भी राष्ट्रवादियों ने यह सोच कर धैर्य किया कि क्या पता ऐसी राजनीति से ही कश्मीर की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकें? परंतु सरकार के अस्तित्व में आते ही आपसी खिचतान आरम्भ हो गयी थी।

क्योंकि मुफ्ती मोहम्मद सईद ने मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए १ मार्च २०१५ को पाकिस्तानियों, अलगाववादियों व उग्रवादियों को प्रदेश में शांतिपूर्ण चुनावों के लिये धन्यवाद देते हुए उनकी भरपूर प्रशंसा करके अकल्पनीय गठबंधन की सकरात्मक सोच को नकारात्मक संकेत दिये। साथ ही मुफ्ती मोहम्मद ने बिना विलंब किये पत्थरबाजों का सरगना व कई आतंकवादी गतिविधियों का दोषी खूंखार आतंकी मसर्रत आलम को छोड़ने का निर्णय जो अभी कुछ सरकारी फाइलों में नियमानुसार अटक रहा था को पूरा करके घाटी के अलगाववादियों के हित का संदेश दिया। इस अप्रत्याशित निर्णय से साझा सरकार की व्यापक निदा हुई और पूरे देश में आलोचनाओं की झड़ी लग गई। जबकि भाजपा इस निर्णय से पूर्णतः अनभिज्ञ थी और यह न्यूनतम साझा कार्यक्रमानुसार नही था फिर भी केंद्रीय सरकार में होने के कारण भाजपा को कड़ी आलोचनाएं झेलनी पड़ी थी। इसका विरोध हुआ और भाजपा में उस समय भी पीडीपी से समर्थन वापस लेने की चर्चाएं हुई। क्योंकि भाजपा का स्पष्ट मत था और है कि वह किसी भी परिस्थिति में आतंकवादियों व अलगाववादियों को स्वीकार नही करेगी। लेकिन पूर्वानुमानों के आधार पर यह लगता रहा कि पीडीपी अपनी संकीर्ण कट्टरपंथी विचारधारा के कारण कश्मीर घाटी से बाहर शेष प्रदेश व देश के व्यापक हितों की रक्षार्थ भी क्या कुछ सोच सकती है? इनकी मानसिकता को समझने के लिए यह पर्याप्त है कि जब केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चे (नेशनल फ्रंट) की सरकार १९८९–९० में मुफ्ती मोहम्मद सईद तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वी पी सिंह की कृपा से गृहमंत्री बनें थे तब इनकी छोटी बेटी डॉ० रुबिया सईद का अपहरण हुआ था और ऐसी चर्चा हुई कि आतंकवादियों ने नाटक रचा था। लेकिन फिर भी मुफ्ती मोहम्मद ने अपनी बेटी को छुड़वाने के बदले में पांच खूंखार आतंकियों को छुड़वाया था। वैसे भी मुफ्ती मोहम्मद के गृहमंत्री रहते हुए उस अवधि में लगभग ७० दुर्दान्त आतंकियों को छोड़ा गया था, परंतु यह भी ध्यान रहे कि उस समय जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री फारुख अब्दुल्ला थे। राष्ट्रवादियों को यह भी सोचना चाहिये था कि जब मुफ्ती मोहम्मद ने कांग्रेस अन्य क्षेत्रीय दलों के समर्थन से २००२ में सरकार बनायी थी तो उस समय भी हीलिंग टच के नाम पर पोटा में बंद आतंकवादियों को सैकड़ों की संख्या में रिहा किया गया था साथ ही उनको परिवार सहित पुनर्वास में अनेकों सहायता दी गयी। यहां यह भी लिखना आवश्यक हो गया है कि इनके बाद आने वाली अब्दुल्लाओं आदि की सरकारों ने भी इस नीति का अनुसरण करते हुए कश्मीर में हज़ारों आतंकियों को रिहा किया और उनके पुनर्वास में सैकड़ों करोड़ रुपये लुटाये साथ ही सरकारी नौकरियां भी दी जाती रही थी। समाचारों से यह भी स्पष्ट हुआ कि मुफ़्ती मोहम्मद सईद के कट्टरपंथियों के प्रति नरम व्यवहार से अनुकूल स्थिति का अनुचित लाभ लेकर पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था आई.एस.आई भी हमारे देश के विरुद्ध बड़े षडयंत्रों को पुनः रचने के लिए सक्रिय हो गयी। अलगाववादियों के हौसलें इतने बुलंद हो गए थे कि उन्होनें विशेष रूप से प्रत्येक शुक्रवार को भारत विरोधी व पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाना व पाकिस्तान, इस्लामिक स्टेट एवं लश्कर–ए–तोईबा के झंडे लहरा कर राष्ट्रवाद की धज्जियाँ उड़ाते रहे। भारतीय तिरंगे को जला कर भी ये आतंकी व अलगाववादी अपने को निर्दोष ही मानते रहे। सुरक्षा बलों के प्रति उग्र प्रदर्शन व पत्थरबाजी की बढ़ती हुए घटनाओं ने घाटी को घायल कर दिया। साथ ही पाकिस्तान द्वारा युद्धविराम उल्लघंन व आतंकियों की घुसपैठ थामे नही थम रही फिर भी राष्ट्रीय हित के लिए इस अपवित्र गठजोड़ को भाजपा ने निभाने के निश्चय पर पुनः विचार नही किया। लेकिन मुफ्ती मोहम्मद सईद का ८ जनवरी २०१६ को लगभग १० माह के कार्यकाल के पश्चात निधन ने प्रदेश में पुनः सरकार के नेतृत्व को लेकर लगभग ८० दिन भाजपा व पीडीपी में मंथन हुआ। जिसमें पीडीपी की अध्यक्षा व मुफ्ती मोहम्मद सईद की बड़ी बेटी महबूबा मुफ्ती को ४ अप्रैल २०१६ में मुख्यमंत्री की शपथ दिलवायी गई। इस निश्चय में इतना अधिक समय लगने का मुख्य कारण था कि महबूबा अपने दिवंगत पिता से अधिक कट्टर होने के कारण भाजपा इनको अपने अनुकूल नही समझ रही थी क्योंकि महबूबा का व्यवहार भाजपा के प्रति अपने पिता से अधिक असामान्य रहा। आपको ज्ञात होना चाहिये कि प्रमुख अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी तो महबूबा मुफ्ती को बेटी कहकर पुकारते है। महबूबा मुफ्ती ने भाजपा के साथ पुनः सरकार बनाने से पूर्व केंद्र सरकार को सेना के अधिकार में चार विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा के लिए उपयोगी लगभग ३०० एकड़ भूमि को रिक्त करवाने का वायदा लिया। उसके अनुसार सेना ने ३१.३.१६ तक वह भूमियां खाली करके राज्य सरकार को सौपी। सशस्त्र बल विशेष शक्ति अधिनियम (असपा) को हटाने के लिए मुख्यमंत्री पिता के बाद महबूबा भी उसी आक्रामकता के साथ अड़ी रही। परंतु निरंतर हो रही आतंकवादी घटनाओं और पत्थरबाजों के प्रकोप से बचने के लिए सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस मांग को कुछ सीमा तक निलंबित रखा। हिजबुल मुजाहिदीन का स्थानीय कमांडर व कश्मीरी आतंकियों का पोस्टरबॉय बुरहान वानी के ८ जुलाई २०१६ को मुठभेड़ में मारे जाने के बाद उसका बदला लेने के लिए पाकिस्तानी सेना व आतंकी अत्यधिक उग्र व आक्रामक हो गये। जिहाद के लिए ये मजहबी आतंकी अपने एक एक साथी की मौत का बदला लेने के लिए कैसा भी दुस्साहस करने के लिए संकल्पित थे। ऐसे में महबूबा ने भी बुरहान वानी को एक और अवसर देने की बात कही थी। लेकिन विशेष ध्यान देना होगा कि बुरहान वानी के बाद हिजबुल के कमांडर जाकिर रशीद भट्ट ने सोशल मीडिया पर कश्मीरियों को भड़काते हुए एक वीडियो डाला जिसमें उसके कथनानुसार "जब हम हाथ में पत्थर या बंदूक उठाते है तो इसलिए नही कि हम कश्मीर के लिए ऐसा कर रहे हैं। हमारा एक ही मकसद होना चाहिये कि हम इस्लाम के लिए लड रहे हैं, ताकि हम शरिया को बहाल कर सकें।" इसके अतिरिक्त विभिन्न घटनाओं पर सेनाओं को दोषी बनाकर

शेष पृष्ठ 11 पर

राख से उभरा इजरायल

धर्मेन्द्र पांडेय

तारीख गवाह है कि यह धरती हमेशा से ही मानसिक ताकतवर की ओर झुकती रही है। बचपन में सुना था कि इस धरती पर डायनासोर प्रजाति के सैकड़ों टन भारी जानवर रहते थे। पर आज उनके जीवाश्म मात्र बचे हैं। इसी तरह जीवों की लाखों प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं।

अब बात करते हैं सबसे बुद्धिमान प्राणी मनुष्य की। पिछले ढाई हजार सालों में कई संप्रदाय, मत, प्रजातियाँ इत्यादि समाप्त हो चुके हैं। अमेरिका के मूल निवासी रेड इंडियंस अपने ही देश में अति अल्पसंख्यक और उपेक्षित हैं। रोमन साम्राज्य का कोई नामलेवा नहीं बचा है। मिस्र और यूनान की प्राचीन संस्कृति किताब के अध्याय तक सिमट चुकी है। प्रशिया, ऑटोमन, मेसोपोटामिया इतिहास के अध्याय की चौखट में सिमट कर रह गए हैं। अफ्रीकी देशों की ज्यादातर मान्यताएं समाप्त हो चुकी हैं। नई पीढ़ी को तो पता भी नहीं होगा कि रस्सियों की बुनाई के अक्षरों वाली किताबें पश्चिमी आक्रांताओं द्वारा 'बकवास और जंगलीपन' की निशानी कह कर जला दी गईं। इन सारे उदाहरणों, कहानियों और कथाओं के साथ ही साथ एक किंवदंती भी चलायमान रही कि पिछले दो हजार सालों तक धराविहीन रही एक कौम अभी तक जिंदा है। जिंदा ही नहीं है बल्कि दुनिया की बौद्धिक क्षमता के पांचवें भाग की मालिक है। उस कौम की आधुनिक उपलब्धियाँ भी किंवदंती बन जाती हैं। अमेरिका, यूरोप और अरब समेत दुनिया के ज्यादातर लोगों की नजर में घृणा, उपहास और ईर्ष्या का पात्र रहने के बावजूद **वट वृक्ष की तरह जो दिन-ब-दिन मजबूत होती जा रही है, उस कौम का नाम है, यहूदी (Jews)।**

यहूदियत की कथा आप कहीं से भी शुरू कीजिए, आपकी कलम उनके शोषण की स्याही से बच नहीं सकती। अबराहम की अपने लोगों को लेकर जूडिया (आज के इजरायल) में दर–दर भटकने की कथा हो या ७०० सालों की गुलामी के पश्चात् अपने स्वर्ग में लौटने तथा बसने की कथा, यूनानियों के खिलाफ जूडस मकाबियस और उसके चार भाईयों के नेतृत्व में पहाड़ों और दलदलों में छिप कर ३० सालों तक निरंतर किए गए महायुद्ध के वीरोचित प्रसंग हों या १३५ ई. में रोमन सम्राट हाद्रियन द्वारा जेरूसलम के **सारे यहूदियों को काट कर उनके घरों को समतल कर पूरे शहर में हवा चलवा देने का खूनी प्रसंग,** अगले दो हजार वर्षों तक बंजारों की तरह यूरोप भर में (बहुत भारी संख्या में अपने भारत में भी आ गए थे) वहाँ के निवासियों के बीच अपमानित, लांछित और पददलित किए जाते रहने की कथा हो या जर्मन होलोकॉस्ट के चैंबर्स की दुर्गंध; होती रही है। पर कीमत चुकानी पड़ी अरबों को, जो सैकड़ों सालों से मुट्ठी भर यहूदियों के साथ अमन–चैन से रहते आ रहे थे। आधुनिक इजरायल की कहानी उस प्राचीन यूनानी कहानी की तरह है जिसमें फीनिक्स नामक पक्षी बार–बार जल कर भी राख से उभरता है। यूनानी इस पक्षी को अमर पक्षी कहते हैं। यहूदियों और इजरायल का इतिहास भी उसी फीनिक्स पक्षी की तरह है। वे बार–बार हाशिए पर ढकेले गए, परन्तु उनकी जिजीविषा को कोई तोड़ नहीं पाया।

आधुनिक इजरायल की कथा एक संयोग से शुरू होती है। किसी को नहीं पता था कि **१८६० का यह संयोग १४ मई १९४८ को इजरायल के राष्ट्र घोषित किए जाने की पृष्ठभूमि तैयार कर रहा था।** सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में जबकि पूरा यूरोप नवजागरण और मशीनीकरण की बदौलत आधुनिक होने का दंभ भर रहा था, यहूदियों की खिलाफ 'एंटी सेमेटिज्म' अपने चरम पर था। अर्थात् जो व्यक्ति सैमाइट जनजाति से संबंध रखता हो तथा अरब, हिब्रू या एरेमेइक (जो कि तब तक समाप्त हो चुकी थी) बोलता हो, उनकी नजर में ऐसे लोग चलाक होते हैं, वे किसी के भी अपने नहीं होते तथा छोटी–छोटी बातों पर लोगों को धोखा दे सकते हैं। आम जन यहूदियों को अपने में मिलाने को तैयार न थे। यहूदी को अपने कपड़ों पर बायीं तरफ तारा लगाकर रहना पड़ता था ताकि लोग उन्हें दूर से ही पहचान सकें इसकी तुलना काफी हद तक अपने देश में प्राचीन–मध्य काल के अछूतों की कमर में बँधने वाली झाड़ू से की जा सकती है।

उसी समय १८६० में फ्रांस की सेना रूस के हाथों बुरी तरह पराजित होती है। राष्ट्रवाद की लहर के बीच हार का ठीकरा फोड़ने के लिए एक 'बलि के बकरे' की तलाश शुरू हुई जो अल्फ्रेड ट्रेफस नाम के यहूदी पर जाकर पूरी होती है। आरोप साफ थे। वह एक यहूदी था इसलिए उसने देश को धोखा दिया और महान फ्रांस को जारशाही के सामने घुटने टेकने पड़े। यूरोप खासकर फ्रांस के सभी समाचारा पत्रों के लिए यह मामला एक हॉट केक था। लगभग हर बड़े समाचार–पत्र के पत्रकार पेरिस में जमा थे। उसी भीड़ के बीच एक **यहूदी पत्रकार भी था, जिसका नाम था थियोडोर हर्जल।** थियोडर की जवानी तत्कालीन एस्ट्रो हंगेरियन साम्राज्य के विएना में बीती थी जहाँ पर वह एक सरकारी कर्मचारी था। पर एंटी समेटिजम से तंग आकर वह फ्रांस चला आया, जहाँ पर उसने पत्रकारिता को पेशा बना लिया। उसे लगा कि ट्रेफस के मामले में मुख्य कारण आम यूरोपियन के मन में यहूदियत के प्रति छिपी घृणा है। हर्जल ने यहूदी लोगों के राष्ट्रीय आन्दोलन को संगठित करना आरंभ कर दिया। इस आन्दोलन के कर्ता–धर्ता का मुख्य लक्ष्य था–यहूदियों के लिए एक अलग और स्वतंत्र राज्य, जो यहूदियों के होमलैंड यानी हजरायल की जमीन पर स्थापित हो। इस प्रकार लगभग २ हजार वर्षों के पश्चात् इजरायल की संकल्पना को बल मिला जिसे लोग भूल चुके थे।

यहूदी धर्म के संस्थापक पैगम्बर अबराहम के पोते याकूब का नाम 'इजरायल' भी था। याकूब अका इजरायल ने १२ जातियों (उनमें से १० लुप्त हो चुकी हैं। कुछ जनश्रुतियों के अनुसार वे सब कश्मीर आ गए और बाद में इस्लाम ग्रहण कर लिया।) को मिलाकर एक किया। इन जातियों का सम्मिलित राष्ट्र इजरायल कहा जाने लगा। कालांतर में इबरानी भाषा में इसका अर्थ हो गया–एक ऐसा देश जो ईश्वर को प्रिय हो। **याकूब के बेटे यहूदा अथवा जूदा के नाम पर ये यहूदी ज्यूज कहलाए। बासइबिल का पूर्वार्ध, जिसे 'ओल्ड टेस्टामेंट' कहा जाता है, इनका प्रमुख ग्रंथ है।** इसके तीन भाग हैं। पहला भाषा है 'तौरित' अर्थ धर्म धारण करने वाला। दूसरा भाग 'यहूदी पैगम्बरों का जीवन चरित्र' तथा तीसरा भाग 'पवित्र लेख' है। इसका रचना काल ४४४ ईससी पूर्व से १०० ईसवी पूर्व के बीच माना जाता है।

आगे चलकर यहूदियों को मिस्र का संक्रमण करना पड़ा। जहाँ बाद में उन्हें फारोहों की गुलामी स्वीकारनी पड़ी। लगभग ७०० वर्षों के पश्चात् (इतिहासकार इसे लगभग २५० वर्ष से ३०० वर्ष मानते हैं) दूसरे पैगम्बर मूसा के नेतृत्व में एक बार फिर लौटे तथा अपनी मेहनत और जिजीविषा के दम पर जूडिया की घाटी को हरा–भरा कर दिया। तीसरे पैगम्बर दाउद के बेटे सोलोमन के समय इजरायल ने खूब उन्नति की। ७२२ ईसवीं पूर्व में असीरिया के राजा शुलमानु अर्शारिद ने इजरायल की तत्कालीन राजधानी समरिया पर चढ़ाई कर कब्जा कर लिया। तब से लेकर १४२ ईसवीं पूर्व तक वे खल्दियों, ईरानियों एवं यूनानियों के गुलाम रहे। १६८ ईसवीं पूर्व में अंतिओकस चतुर्थ के समय यहूदियों ने विद्रोह कर दिया जिससे रुष्ट होकर उसने यहूदी मंदिर को लूट कर शनिवारा के दिन हजारों हयूदियों का वध करवा दिया। उसी समय इजरायल के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पर जूडस मकाबियस नाम का सितारा चमकता है। जेरूसलम के महत्वपूर्ण लेवी पुजारियों में से एक **आंदोलन बिन मेटाथियास** का यह द्वितीय पुत्र अपने चार भाइयों और रबाई रागेश के साथ मिलकर यूनानियों से लड़ता है। पूरी जूडिया के स्त्री–पुरुष, आबाल–वृद्ध अपने घरों को छोड़करा, शराब के पीपे तोड़ पहाड़ों और दलदलों में जाकरा छिप जाते हैं।

३० सालों तक चलने वाला यह युद्ध विशुद्ध छापामार शैली पर आधारित था। 'दुश्मन को ललचाकर पहाड़ी दर्रों में फँसाओ, और फिर ज्यादा से ज्यादा को मारकर भाग जाओ।' पश्चिम में इसी युद्ध में पहली बार ताड़ की टहनियों से बने पतले बाणों की बारिश कर दुश्मन को भयभीत करने की रणनीति अपनाई गई। **शेष पृष्ठ 10 पर**

तीन बच्चों की विधवा माँ, अप्रैल में, जत्थे के साथ, पंजाब से पाकिस्तान, बैसाखी मनाने गई थी वहाँ किसी मुस्लिम युवक ने उससे मोबाइल पर वार्ता कर ली। बातों में उसको युवक से प्रेम हो गया और उसने धर्म बदलकर उस युवक से निकाह कर लिया।

क्या निकाह सफल रहेगा?

- सिख धर्मी महिला ने झूठ बोला कि बच्चे उसके नहीं हैं।
- उसने कहा कि बच्चे उसकी मौसी के हैं।
- उसने पाकिस्तान की नागरिक बनने के लिए उच्च न्यायालय में प्रार्थनापत्र दाखिल कर दिया है।
- बच्चे अपने दादा के साथ रह रहे हैं।
- दादा ने भारत सरकार को वास्तविकता से सूचित कर दिया है।
- लव जिहादी, युवतियों को फसाने में प्रायः सफल हो जाते हैं।
- ऐसे निकाह असफल ही देखे गए हैं।
- हो सकता है कि भेंट वार्ता में युवक ने कुछ सुंघा दिया हो या कोई पदार्थ कोल्ड ड्रिंक में मिलाकर पिला दिया हो जिससे उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और उसने सिख धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म स्वीकार करके शादी भी कर ली और बच्चों को भूल गई।
- यह जांच का विषय है। भारत सरकार से अनुरोध है कि वह उचित कार्रवाई करे।

इन्द्रदेव, संचालक, वीर सावरकर पुस्तकाल्य एवं वाचनालय

भैया आजाद की स्मृति में

✍ यशपाल

जनवरी, सन १९३१ की बात। हम लोगों को ऐसा जान पड़ रहा था कि कांग्रेस और अंग्रेज सरकार में समझौता हो जाएगा। आजाद को अंग्रेज सरकार से समझौते का विचार असह्य था। उनका कहना था कि अंग्रेज जब तक इस देश में शासक के रूप में रहें, हमारी उनसे गोली चलते ही रहनी चाहिए। समझौते का कोई अर्थ नहीं है। अंग्रेज से हमारा एक ही समझौता हो सकता है कि वे अपना बोरिया–बिस्तर संभाल कर यहाँ से चल दें। यही भावना सन १९४२ में 'क्विट इंडिया' माँग या 'भारत छोड़ो' नारे में प्रकट हुई थी। मैं और सुरेन्द्र पांडे भी सिद्धान्त रूप से आजाद की बात मानते थे; परन्तु यह नहीं चाहते थे कि कांग्रेसी नेताओं को अपना शत्रु बना लें। मैं किसी समय आजाद से मजाक करने लगता–"भैया घबराते क्यों हो? कांग्रेस और अंग्रेज सरकार का समझौता हो जाएगा, तो फिर हमें फरार रहने की जरूरत नहीं होगी। तुम्हारा नाम खूब प्रसिद्ध हो चुका है। कांग्रेसी इतना तो सोचेंगे कि तुम थानेदार की पगड़ी और वर्दी में खूब जँचोगे। तुम्हें थानेदारी मिल ही जाएगी।"

आजाद को इस बात से चिढ़ आती कि मैं उन्हें केवल 'थानेदार' के ही लायक समझता हूँ। क्रोध दिखलाते–"अबे चल, तू बड़ा अफलातून है। तू क्या बन जायेगा?"

मैं मजाक जारी रखता–"तुम थानेदार बनोगे तो हम लोगों की सिफारिश नहीं करोगे? मैं कम से कम हेड कान्स्टेबल बनूँगा।" और सुरेन्द्र पांडे की ओर संकेत कर कहता; क्योंकि पांडे के हाथ में कोई न कोई पुस्तक थमी ही रहती थी, "पांडे के लिए तुम सिफारिश कर देना, यह मिडिल स्कूल का हेडमास्टर बन जायेगा।" मैं और सुरेन्द्र पांडे दोनों अभी तक जिन्दा हैं। कांग्रेसी सरकार की 'कृपा' से तो हम हेड कान्स्टेबल और मिडिल स्कूल के मास्टर भी न बन सके।

गोलमेज द्वारा समझौता हो जाने की संभावना की मानसिक उथल–पुथल के कारण हम लोग इलाहाबाद, कटरे के मकान में एक तरह से शिथिलता के दिन बिता रहे थे। समय १९३१ जनवरी का ही था; परन्तु हवा में फागुन का फर्राटा और सुहानापन आ गया था। सड़कों पर सूखे पत्ते झड़–झड़ कर उड़ा करते थे। मुझे खूब याद है कि हम लोग कहा भी करते थे कि इस बार हवा में जाने क्या मस्ती भरी है। मकान की छत खपरैल की थी, जैसी कि इलाहाबाद में साधारण स्थिति के मकानों की होती थी।

खपरैल की सांधों से हवा आती रहती और छत के ऊपर नीम की पत्तियाँ और धूल भी गिरती रहती। हम लोग दरी या कम्बल बिछाये कुछ पढ़ा करते या समझौते की संभावनाएँ और हानि–लाभों पर बात करते रहते।

एक पतीला था, उसमें खिचड़ी बना लेते। कभी–कभी इस खिचड़ी में मांस भी डाल लेते। आजाद ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिए मांस के टुकड़ों को गाली दे, परे हटाकर शेष का आहार कर लेते। आजाद मांस न खाना चाहते थे पर दूसरे साथी खाना चाहते थे। मध्यम मार्ग यही था कि वे मांस के टुकड़े हटाकर शेष खिचड़ी खा लेते। आजाद को मांस पसन्द नहीं था पर छूत का भी डर नहीं था। आजाद ने सुबह दण्ड–सपाटे लगाना और साथियों से पंजा लड़ाना भी शुरू कर दिया।

सुरेन्द्र पांडे एक डिब्बा च्यवनप्राश ले आये थे। रात सोते समय डिब्बा आजाद के हाथ पड़ गया। पूछा–"अबे, इसमें यह काला–काला क्या है?"

पांडे ने बताया–"खाँसी की दवा है।"

मैंने चुटकी ली–"भैया बहुत पौष्टिक और ताकत की दवा भी है।"

आजाद ने संदेह प्रकट किया–"मल्हम–सा लगता है।"

मैंने बताया–"स्वाद भी बहुत अच्छा है।"

"सच?" आजाद ने पूछा।

थोड़ा–सा चाटकर देखा और बोले–"है तो मजेदार" और पूरा डिब्बा खा गये।

सुरेन्द्र पांडे कहते रहे–"भैया दवाई है। नुकसान कर जाएगी।"

"चल! चल!" आजाद ने एक न सुनी।

अगले दिन सुबह जब बहुत अधिक दवाई खा जाने का बुरा परिणाम सामने आया तो हम दोनों पर बहुत बिगड़े, "धत्त, क्या वाहियात चीज खिला दी।... कहते थे ताकतवर है...।" जितना ही हम हँसते उतना ही आजाद दवाई की निन्दा कर उसे गाली देते जाते।

समझौते से खिन्न मानसिक अवस्था में आजाद कानपुर चुन्नीगंज के मकान में आकर रात में बहुत देर तक अपने गत जीवन की बातें सुनाते रहते। कुछ आजाद से सुनी चर्चा और कुछ आजाद के बहुत समीपी साथी भगवानदास माहौर और फरारी में उन्हें प्रायः स्थान देने वाले मास्टर रुद्रनारायण जी से सुनी बातों के आधार पर विश्वास है कि आजाद का जन्म स्थान मध्य भारत की झाबुआ तहसील का भावरा ग्राम है। उस समय यह गाँव अलीराजपुर रियासत के अन्तर्गत था। आजाद के पिता का नाम पंडित सीताराम था और माता जगरानी देवी थीं। तिवारी जी की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, इसलिए उन्नाव जिले में अपने बहनोई शिवनन्दन और रामप्रसाद मिश्र के यहाँ रहते थे। बहुत निस्पृह और निष्ठावान ब्राह्मण थे। स्वभाव काफी तीखा और किसी की बात न मानने वाला था। किसी बात से चिढ़कर उन्नाव छोड़ अलीराजपुर चले गये थे। वहाँ उन्होंने रियासत के एक बाग की रखवाली का काम आठ–दस रुपये मासिक पर कर लिया था। उस समय ऐसी ही तनखाहें हुआ करती थीं। अन्न–वस्त्र सस्ता था।

बचपन में आजाद भी बच्चे ही तो थे। खाने–खेलने का शौक भी था। खाने में उन्हें गुड़ बहुत पसंद था और खेल था–देसी बारूद भर कर खिलौने की तोप चलाने का; पर इस खेल के लिए पैसे काफी न मिलते थे। एक दिन आजाद ने बाग को अपना ही समझ, कुछ फल तोड़कर गुड़ और बारूद के लिए बेच लिये, पिता की दृष्टि में यह अक्षम्य अपराध था। आजाद पर इतनी मार पड़ी कि माँ का कलेजा दहल गया और आजाद के स्वाभिमान ने उस घर में रहना ही स्वीकार नहीं किया। पढ़ने की भी इच्छा थी। माँ ने बहुत यत्न से बचा कर रखी हुई अपनी पूँजी, ग्यारह रुपये आजाद को दे दी। आजाद विद्या के केन्द्र काशी में पहुँच गये। वहाँ वे एक क्षेत्र में रहकर लघु कौमुदी और अमरकोष रट रहे थे कि कांग्रेस के सविनय कानून भंग आन्दोलन ने उन्हें आकर्षित कर लिया। उस समय उनकी उम्र तेरह–चौदह वर्ष रही होगी।

कांग्रेस के सविनय–कानून–भंग आन्दोलन में गिरफ्तार होकर जब वे अदालत में पेश किये गये तो उनके हाथ अभी इतने छोटे थे कि बंद हथकड़ियों में से निकल आते थे। आजाद हथकड़ियों से हाथ निकाल–निकाल कर पुलिस वालों को चिढ़ाने में मजा लेते थे। परिणाम में उनके दोनों हाथों को मिलाकर हथकड़ी जड़ दी गई।

अदालत में मजिस्ट्रेट ने उनकी अवज्ञा की–"अभी हाथ भर का तो है नहीं, चला है आन्दोलन करने! भाग जा!" आजाद ने मजिस्ट्रेट को फटकार दिया। कानूनन आजाद को उस आयु में जेल की सजा नहीं दी जा सकती थी, इसलिए ब्रिटिश न्याय की रक्षा के लिए तैनात मजिस्ट्रेट ने उन्हें जेल में ले जाकर बारह बेंत लगाकर छोड़ देने की सजा दे दी। भुक्तभोगी जानते हैं कि यह सजा छह मास की जेल की अपेक्षा कहीं कड़ी थी। मजिस्ट्रेट का विचार था कि इतने दंड से छोकरे को सुबुद्धि आ जाएगी।

अदालत से मिली बारह बेंतों की सजा का अभिप्राय कुछ लोग नहीं भी समझ सकते हैं। जैसे स्कूल में शरारत करने पर बेंत लगा दिये जाते थे, वही अभिप्राय अदालत से दी जाने वाली बेंतों की सजा का नहीं होता। अभियुक्त को जेल में ले जाकर पूरे कपड़े उतार दिये जाते हैं। उसे एक टिकटिकी अर्थात् काठ के आड़े खड़े चौखटे के साथ खड़ा कर हाथ–पाँव टिकटिकी से बाँध दिये जाते हैं। नितम्बों और पीठ पर दवाई से भीगा मलमल का एक टुकड़ा डाल दिया जाता है। बेंत पानी में भीगे पड़े रहते हैं। बेंत लगाने का काम सधा हुआ अभ्यस्त भंगी करता है। जेलर के गिनती पुकारते जाने पर भंगी खूब हाथ फैलाकर पूरा पैंतरा लेकर बेंत को लहरा–लहरा कर अभियुक्त के शरीर पर मारता है। पहली ही चोट में पीठ और नितम्बों से खून उछल आता है। तेरह–चौदह वर्ष के आजाद को इस प्रकार बारह बेंत लगाये गये। आजाद हर बेंत की चोट पर 'वन्दे मातरम्' और 'इंकलाब जिंदाबाद' चिल्लाते रहे।

आजाद बेंतों की सजा पाकर जेल से छूटे तो आन्दोलन में और भी तत्परता से भाग लेने लगे। उसी समय उनका सम्पर्क काकोरी दल के लोगों–मन्मथनाथ गुप्त आदि से हो गया। काकोरी की प्रसिद्ध साहसपूर्ण रेल डकैती में सरकारी खजाना लूटने में उन्होंने भाग लिया था। गिरफ्तारियाँ होने पर फरार हो गये। लड़कपन में भी वे खूब चुलबुले और फुर्तीले थे; इसलिए साथी उन्हें क्विक सिलवर (पारा) के उपनाम से पुकारते थे। रामप्रसाद बिस्मिल के साथ उन्होंने कई राजनैतिक डकैतियों में भाग लिया था। क्रान्तिकारी, डकैती में न तो स्त्रियों पर हाथ उठाते थे, न उनके शरीर के गहने छीनते थे।

ऐसे ही अवसर पर एक ठकुराइन अपने एक सन्दूक पर जमकर बैठ गई। आजाद ने उनसे कहा–"अम्मा! एक तरफ हट जाओ।" ठकुराइन के बात न मानने पर भी आजाद ने उस पर न चोट की और न धक्का देकर हटाया। चतुर ठकुराइन ने इन लोगों को जाते देख आजाद की कलाई पकड़ ली। आजाद भद्रता के विचार से उससे जोर–जबर्दस्ती न कर मुँह ताकते खड़े रह गये। जब सब साथी बाहर आ गये, रामप्रसाद बिस्मिल ने आजाद को न पाकर भीतर जाकर देखा। आजाद भद्रता के नाते बुढ़िया के कैदी बने खड़े थे। बिस्मिल ने ठकुराइन

शेष पृष्ठ 10 पर

(ईसाई मिशनरियों ने नागालैण्ड को धर्मान्तरण के माध्यम से, हमसे दूर करने का बहुत प्रयत्न किया; लेकिन इस लेख से स्पष्ट है कि यह आज भी भारतीय परम्परा से जुड़ा है। इसके लेखक प्रो. गुप्त ने लखनऊ विश्वविद्यालय से ही रसायन शास्त्र में सर्वोच्च उपाधियाँ प्राप्त की है।

नागालैण्ड की सांस्कृतिक विरासत

✍ प्रो. रमेशचन्द्र गुप्ता

पूर्वोत्तर भारत बहुसांस्कृतिक, बहुपान्धिक और बहुभषिक जातियों का समुच्चय है। यह प्रदेश हिमालय और राजमहल की पहाड़ियों के विस्तार भाग की हरीतिमा से समृद्ध है। इसकी भौगोलिक सीमा सिक्किम से प्रारम्भ होकर अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड मणिपुर, मिजोरम होते हुए त्रिपुरा, मेघालय और आसाम तक विस्तृत है। पूर्वोतर भारत का यह प्रदेश एक साथ कई सदियों में जीता है। जीवन–बोध केवल मानसिक स्तरों–उपस्तरों में विभक्त नहीं, बल्कि कई सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक आयामों को व्यापक फलक पर उकेरता है। सम्पूर्ण पूर्वोत्तर का यह प्रदेश प्राकृतिक हरीतिमा से समृद्ध होते हुए भी आज विकास की यूरोपीय अवधारणा में पिछड़ गया है। विकास केवल अवसरचना का हिस्सा ही नहीं, अपितु संस्कृति की विकासमान प्रक्रिया केवल अवसरचना का हिस्सा ही नहीं, अपितु संस्कृति की विकासमान प्रक्रिया का वाहक भी है। पूर्वोत्तर भारत का अध्ययन संस्कृति की इस विकासमान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में करना तर्कसंगत और न्यायसंगत होगा। यहाँ समतल, सहज और व्यवस्थित कुछ भी नहीं। न प्रकृति, न जीवन और न ही मानव क्योंकि यह लोकभूमि है। लोकजीवन में मानसिक स्तर पर सहजता और निश्छलता गंगा जल की तरह निर्मल होती है, पर उसकी अस्पष्टता में जौवन बेतरतीब कबड़ खाबड़ और असहज–सा प्रतीत होता है।

नागालैण्ड का लगभग समूचा हिस्सा पर्वतीय है। उतर में नागा पहाड़ियाँ बह्मपुत्र घाटी से अचानक क्रमशः ऊँचाई की ओर अग्रसर होती है और इसके बाद दक्षिण–पूर्व दिशा में इनकी ऊँचाई क्रमशः २००० मीटर तक ही जाती है फिर म्यामार की सीमा के पास यह पहाड़ियाँ पटकोई पर्वत श्रृंखला में मिलती है। समूचा प्रदेश कई नदी–धाराओं से विभक्त है। जल–पाराओं की तरह ही नागा जनजाति भी अपनी परम्परा और संस्कृति के कई अर्थ सन्दर्भो के साथ जीवन है। यहाँ की सभी जनजातियों की भाषा संस्कृति और रीति–रिवाज अलग–अलग कई अर्थ–छावियों को व्यापक फलक पर चित्रित करती है। यहाँ की संस्कृति से अनभिज्ञ बाहरी लोगों के लिए यह प्रदेश नागाओं की भूमि के रूप में ही प्रसिद्ध है। समूचा प्रदेश भौगोलिक और आर्थिक असमानता से बद्ध है फिर भी ये अपने जीवन को बेलौस तरीके से जीते हैं।

वनस्पति और खनिज संसाधन से सम्पन्न यह प्रदेश कई जनजातियों पर आश्रय स्थल है। यह प्रदेश जनजातियों और उप–जनजातियों में विभक्त है यथा–अंगामी आओ धाकेसंग कचारी, लोधर बांग कुर्की कोंयक, सेमा, फोभ, रिक्आसनीउंगन, पोचुरी, रेंम्मा संगताम और

जोलियांग आदि। यह बड़ा ही सुखद संयोग है कि यहाँ की अधिकतर बोलियाँ और जनातियों के नाम समान है। जैसे– अंगामी–अंगामी (बोली), आओं–आओं (बोली)। अपितु नागामीज (क्रियोल भाषा–रुप) और अंग्रेजी यहाँ की सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित है। नागाजन का सम्पर्क बहुत ही कम बाहरी लोगों से होता है, जिस कारण यहाँ हिन्दी भाषा का प्रथलन थोड़ा कम है। समाचारपत्र दूरदर्शन और चलचित्र जैसे माध्यमों के कारण अब हिन्दी का विस्तार तेजी से हो रहा है।

भारतीयता की खुशबू से सराबोर यह प्रदेश अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए ख्यात है। आदिवासी अस्मिता विषयक विमर्श नये उभार के साथ नागालैढज्ञ में अपनी जमीन खोज, रही है। भविषय अभिव्यक्ति इसके केन्द्र में अवस्थित है। क्योंकि भाषा ही संस्कृति की प्राणवायु है। महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में ठीक ही लिखा है कि 'धर्मान्तरण करना आसान है, मातृभाषा बदलना लगभग असम्भद है। भाषा केवल सम्प्रेरण का माध यम नहीं है बल्कि वह संस्कृति की अधिरचन्द्र का आधार है, जो कि संस्कृति को मूर्त रूप प्रदान करता है। केन्द्र और राज्य सरकारों की तरफ से जनजातीय क्षोध संरबना के मध्यम से भाषाओं को संरचित बनने का प्रयार अनवरत जारी है। यहाँ की कुछ बोलियाँ लुप्तप्राय की श्रेणी में आ रही हैं। आओ और अंगामी जनजाति की भाषा और साहित्य सर्वाधिक समृद्ध है। अंगामी 'चीनी–तिब्ती' परिवार की तिब्बती–बर्मी शाखा की एक टोनिम (Toneme) प्रधान भाषा है, जिनमें तान के चढ़ाव–उतार से किसी–किसी शब्द में आठ अर्थो तक का बोध होता है। इसे रोमन लिपि में लिखा जाता है।

नागालैण्ड में जनजाति भाषा के कोष के निर्माण का कार्य नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा के प्रो. ब्रजबिहारी कुमार (वर्तमान अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक–विज्ञान शोध संस्थान) के निर्देशन में किया गया था। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य था, जो नागालैण्ड के साहित्य–अध्येता के लिए अमूल्य थाती है। नागालैण्ड भाषा परिषद् कोश–निर्माण के अतिरिक्त लोक–कथा के संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रही है।

नागालैण्ड की आओ, अंगामी तथा लोथा भाषा के भी कोश हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो चुके हैं। लोथा–हिन्दी कोष श्री फ्याखामो लोथा 'बोखा' के निर्देशन में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से प्रकाशित है। इसी कड़ी में डॉ. राधेश्याम गौतम ने भी नागालैण्ड की भाषाओं पर गम्भीर शोध–कार्य किया है। कुछ नागा भाषाओं का हिन्दी माध्यम से व्यतिरेकी अध्ययन भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है।

यह प्रदेश मुख्यतः सोलह जनजातियों और उप–जनजातियों में विभक्त हैं। साथ ही सभी जनजातियों की भाषाएँ और उससे सम्बद्ध कुछ बोलियाँ भी हैं। किसी भी जनजाति की बोली दूसरे जनजाति के लिए अबूझ–सी होती है। इनकी भाषा तिब्बती–बर्मी भाषा परिवार से सम्बद्ध है। वे मुख्यतः तीन भाषा –समूहों में विभक्त हैं–

केन्द्रीय भाषा : समूह : लोथा, आओ, फोम

पूर्वी भाषा : समूह : कोंयक, चांग

पश्चिमी भाषा : समूह : समा, अंगामी, रेगमा, चाकेसंग

अंगामी, आओ एवं सेमा नागालैण्ड की सबसे महत्त्वपूर्ण भाषाएँ हैं। टेनेडी और आओ भाषा की अपनी लिपियाँ हैं। आओ भाषा की कुछ क्षेत्रीय बोलियाँ भी हैं, जैसे–मोंग्सेन, चुगली, चांकी। चुंगली बोली सबसे अधिक विस्तृत क्षेत्रों में बोली जाती है। आओ नागा ने जो लिपि तैयार की, उसके आधार पर आओ व्याकरण निर्माण की प्रक्रिया में अग्रसर हैं। आओ भाषा का साहित्य अन्य नागा भाषाओं से समृद्ध है। आओ भाषा में तीन प्रकार के टोन (Tone) प्रयोग किये जाते हैं: आरोही टोन (Rising Tone) स्तर टोन (Level Tone) अवरोही टोन (Falling Tone)।

टेनेडी यहाँ की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह अंगामी जनजाति द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। इस भाषा की बोलियाँ निम्न हैं: दजुना, कोहिमा, केहेना, चक्रोमा, खोनोमा, नाली, मीमा, तेगिमा मोजोमे।। अंगामी इस भाषा की मानक बोली है, यह चीनी–तिब्बती भाष परिवार (Sion-Tibetan Family) की सदस्य है। अंगामी भाषा पाँच टोन में बोली जाती है: उच्च (High), मध्यम (Mid), अवरोही मध्यम (Fall Mid), अवरोही निम्न (Fall Low)। लोथा और सुमी भाषा में तीन टोन और माओ में चार टोन प्रयुक्त होते हैं। समी भाषा के टोन और माओ में चार टोन प्रयुक्त होते हैं। समी भाषा के टोन दो सिरों में विभक्त हैं। एक पर इंडो स्फीयर और दूसरे पर सिनो स्फीयर का प्रभाव है। यह सेमा जनजाति की भाषा है।

केवल बीस लाख आबादी वाला यह प्रदेश अपनी बोलियों (मातृभाषा) और संस्कृति के प्रति सजग और सचेत है। आदिवासी साहित्य की अध्येता रमणिका गुप्ता का मत है, "भाषाएँ मरा नहीं करती, भाषाएँ मार दी जाती हैं। भाषा बोलने वाले स्वयं ही मारते हैं या सरकारी–तन्त्र मारता है। बोलने वाले इसलिए मारते हैं क्योकि उनको अपनी भाषा के सहारे रोजगार नहीं मिलता और भाषाओं में रोजगार मिलने लगे, तो भाषाएँ जिन्दा रहेंगी, भाषाएँ समृद्ध होगी, आपस में सहयोग करेंगी, आपस में एक–दूसरे से शब्द लेंगी, समृद्ध होगी और दुनिया भर में भाषाएँ फैलेंगी, मरेंगी नहीं। इसलिए हमारा मनुश्य कर्त्तव्य है– भाषाओं को बचाना, मरने नहीं देना। 'बदलिये जरूर लेकिन मारिये मत।' नागालैण्ड की जनता और प्रशासन दोनों ही भाषाओं के प्रति अपनी जवाबदेही को लेकर सतर्क हैं, क्योंकि यह उनकी अस्मिता से जुडा प्रश्न है। नागालैण्ड के जनजातीय

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

हिन्दुओं को समझना चाहिये कि

- संस्कृत विश्व की सबसे समृद्ध भाषा है। उसमें शब्द संख्या 10 करोड़ है।
- अंग्रेजी के मूल शब्द केवल 35 हजार हैं।
- हिन्दी के मूल शब्द 9 लाख हैं।
- हिन्दी 85 करोड़ लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है।
- अंग्रेजी मात्र 32 करोड़ लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है।
- भारतीय भाषायें विश्व की सर्वाधिक सम्पन्न भाषायें हैं। इनकी रक्षा का संकल्प लें।

जनहित में जारी :

अखिल भारत हिन्दू महासभा

शेष पृष्ठ 7 का **राख से उभरा इजरायल....**

यूनानियों द्वारा भारत के आंशिक विजय में मिले हाथियों का प्रयोग भी उस क्षेत्र में पहली बार किया गया। १४२ ईसा पूर्व में जूडस के छोटे भाई साइमन के नेतृत्व में इजरायल ने स्वतंत्रता की घोषणा की जो ६६ ईसा पूर्व तक रही जब तक कि रोमन जनरल पांपे के नेतृत्व में जेरूसलम पर अधिकार नहीं कर लिया गया। इतिहासकारों के अनुसार इस युद्ध में भी १२ हजार यहूदी मारे गए। छठी शताब्दी में खलीफा उमर ने रोम को पराजित कर यहां कब्जा किया। फिर लगभग १२ सौ वर्षों तक मुसलमानों और ईसाइयों के बीच धर्म युद्ध होते रहे और यहां के मूल दावेदार यहूदी हाशिए पर चले गए। किसी भी बड़ी घटना श्रृंखला की शुरूआत ज्यादातर किसी संयोग से ही होती है। पर आगे की लड़ाई उस व्यक्ति या समाज के संस्कार और उसके मानस में गहरे पैठ बना चुकी आत्म–स्वाभिमान के दम पर ही लड़ी जा पाती है। २६ अगस्त १८६७ को स्विटरजरलैंड के बेसल शहर में वर्ल्ड **जायनिस्ट आर्गेनाइजेशन** की मीटिंग हुई। वहीं तय किया गया कि दुनिया भर के यहूदियों को उस जमीन पर बसाने की तैयारी की जाए जो अबराहम को भगवान के वायदे से मिली थी। पर एक समस्या थी। उस जमीन पर अब अरबों का कब्जा था। उनका देश तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य के अधीन जेरूसलम, नाबलुस और एकर नाम के तीन जिलों में तब्दील हो चुका था। १६०१ में जूइश नेशनल फंड बना, जिसके जरिए दुनिया भर के धनी यहूदियों ने वहाँ जमीन खरीदने के लिए पैसा भेजना शुरू किया तथा बड़ी संख्या में यहूदी अपनी पवित्र भूमि पहुँचने लगे। **इसे उन्होंने 'आलिया' नाम दिया। 'आलिया' का मतलब होता है 'लहर'। १६१४-१७ में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 'अलिया' में काफी तेजी आई।**

तुर्की जर्मनी की ओर से लड़ा और बुरी तरह से हार गया। विरोधी सेनाओं ने तुर्की को ६ भागों में बाँट दिया–तुर्की, लेबनान, सीरिया, इराक, ट्रांसजार्डन और फिलिस्तीन। आधुनिक इतिहास में पहली बार अबराहम को वादे में मिली जमीन को एक नाम मिला। 'ट्रू मैंडेट सिस्टम' के अंतर्गत ब्रिटेन को फिलिस्तीन मिला जहाँ उसे ६ महीने के अंदर लोकल लोगों की सरकार बना कर आजाद कर देना था। बाकी के पाँच मैंडेट में तो यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो गया पर अंग्रेजों का गला फँस गया था। वहाँ की जनसंख्या में अरबों की संख्या ज्यादा थी पर जायिस्ट आन्दोलन की राजनीतिक पकड़ सारे ताकतवर देशों को यहूदियों की ओर मोड़ रही थी।

अगले तीस वर्षों में समानान्तर सरकार 'यीशुव' के अंतर्गत यहूदियों ने एक अलग शिक्षा व्यवस्था और फौज बनाई जबकि उनसे संख्याबल में १० गुना ज्यादा अरब वैसा कुछ न कर पाए। हमेशा की ही तरह वे अपने संख्या बल के अभियान के आश्रित थे। १६४७ में अंग्रेज फिलिस्तीन का मामला लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ की शरण में पहुँचे। उस समय दुनिया भर में यहूदियों के लिए एक अलग देश का प्लान रखा पर अंग्रेज भारत के मामले में अपना हाथ जला चुके थे इसलिए उन्होंने ऐलान कर दिया कि वे १५ मई १६४८ को फिलिस्तीन छोड़ देंगे। आगे की जिम्मेदारी अरबों, यहूदियों व संयुक्त राष्ट्र की थी।

पर **अंग्रेजों के फिलिस्तीन छोड़नपे के एक दिन पहले ही डेविड बेन गुरियन ने स्वतंत्रता का ऐलान कर देश को वही दो हजार साल पुराना नाम दिया, इजरायल।** आगे की कहानी समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, फेसबुक और व्हाट्सएप के माध्यम से इतनी बार कहीं जा चुकी है कि उस पर ज्यादा कुछ कहने के बजाय हम अरब इजरायल युद्ध के मर्म पर ध्यान दें तो एक बात साफ पता चलती है कि हर कदम पर यहूदी अरबवासियों से दशकों आगे थे। गुरियन को पता था कि अंग्रेजों के हटते ही अरब की संयुक्त सेनाएं हमला बोल देंगी इसलिए द्वितीय विश्वयुद्ध की आड़ में अपना हथियारों का ज़खीरा जमा कर लिया। १६४७ में २१ प्रतिशत माँगने वाले इजरायल का ७८ प्रतिशत पर कब्जा है। अरब गाजा और वेस्ट बैंक में धकेल दिए गए हैं।

इन सबके पीछे कार्य किया यहूदियों की एकता, जिजीविषा, और बलिदान की भावना ने। वरना दो हजार सालों से मृतप्राय 'हिब्रू' पाँच वर्षों के भीतर जन–जन की भाषा कैसे बन पाती? 'सिक्स डे वार' हो या 'यौम किप्पुर वार', हर बार इजरायल की ताकत बढ़ती ही गई है। १६३७ से १६४४ के बीच अपनी आबादी का तीन चौथाई भाग गैस चैम्बरों में खो चुका समुदाय, **आज मात्र ८५ लाख की आबादी वाला देश** पूरे अरब और एशियाई मुस्लिम देशों की आँख में शूल–सा चुभता है पर वे उनकी एकता और आगे बढ़कर प्रतिशोध लेने की क्षमता के आगे पंगु हैं। लगभग **७० ईसा पूर्व में समाप्त हुई स्वतंत्रता भले १६४८ में जाकर बहाल हुई** पर उसकी ललक उन्होंने कभी नहीं छोड़ी। सालाना पासोवर भोज के बाद दुनिया भर के यहूदी एक शपथ दोहराते थे और आज भी दोहराते हैं–अगले साल जेरूसलम में। शादी में दूल्हा संकल्प लेता है कि, 'जेरूसलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ, मेरा दाहिना हाथ नाकाम हो जाए।' इजरायल मानवीय स्वतंत्रता का प्रतीक है। तमाम अफवाहों, विडंबनाओं और किंवदंतियों के बीच यहूदियों ने हर उस मानवीय समूह को सहायता दी है जो परपीड़ित रहे। यदि भारत के संबंध में ही बात करें तो १६६२ के युद्ध में तकनीकी सहयोग, वे हमेशा तत्पर रहे क्योंकि उन्हें पता है कि भारत भी हजारों वर्षों के पददलन के बावजूद परंपरा, संस्कार, जिजीविषा को बनाए रखने में सफल रहा है। आज भी वे उन तीन हजार सालों के इतिहास को भूलना नहीं चाहते बल्कि अपने अंतःस्थल के किसी पवित्र कोने में सुरक्षित रखते हैं ताकि आने वाली पीढ़ी को सनद रहे। इसलिए हर यहूदी किसी भी लम्बी बातचीत के अंत में अवश्य कहता है कि–"क्योंकि कभी हम मिस्र के गुलाम थे।"

शेष पृष्ठ 8 का **भैया आजाद की स्मृति.....**

की कलाई पर जोर से हाथ मारकर उन्हें छुड़ा कर डाँटा, "मरवाओगे सबको!" तब कहीं उन्हें मुक्ति मिली। बचपन में पढ़ पाने की इच्छा के अतिरिक्त उन्होंने जीवन में कभी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं बनाई। उस समय की अपनी समझ–बूझ और उस समय की परम्परा में आस्था रखने के कारण पढ़ने का अर्थ हुआ था संस्कृत।

एक बार राजनैतिक चेतना उत्पन्न हो जाने के बाद देश की मुक्ति के लिए विदेशी शासक से लड़ने के अतिरिक्त कोई और इच्छा भी नहीं थी। उनकी कल्पना में अपने जीवन की परिणति यही थी कि किसी न किसी दिन विदेशी सरकार की पुलिस से लड़ते हुए मारे जाएँगे। बहुत स्पष्ट और दृढ़ इरादा था कि लड़ाई में मरना ही है। सदा ही कहा करते थे "गिरफ्तार होकर अदालत में हाथ बाँध बंदरिया का नाच मुझे नहीं नाचना है। आठ गोलियाँ पिस्तौल में हैं और आठ का दूसरा मैगजीन है। पन्द्रह दुश्मन पर चलाऊँगा और सोलहवीं यहाँ।" और वे अपनी पिस्तौल की नली अपनी कनपटी पर लगा देते थे।

एक रात वे कहने लगे–"कांग्रेस ने अगर समझौता कर ही लिया तो मैं पेशावर से परे सरहद पार निकल जाऊँगा। वजीरी और अफरीदी अंग्रेजों से कभी समझौता नहीं कर सकते। उन्हीं लोगों के साथ अंग्रेजों से लड़ूँगा।... सोहन (मेरा पार्टी–नाम) तुमने और दुइयाँ (प्रकाशवती) ने अच्छा किया कि साथी बन गये। मैं अब अगर सोचूँ भी तो ऐसी स्त्री है कहाँ? दीदी (सुशीला) को ही देखो, क्या मरगिल्ला सा जिस्म है। दिमाग ही को लेकर कोई क्या करेगा? अलबत्ता भाभी (दुर्गा देवी बोहरा) हैं कुछ, पर वह भी नहीं...। मैं तो ऐसी स्त्री से शादी करना चाहता हूँ कि कांग्रेस वाले अंग्रेजों से समझौता कर भी लें तो हम सरहद पार चले जाएँ। दोनों के कंधों पर राइफलें हों और एक–एक बोरी कारतूस। जहाँ घिर जायें, वह राइफल भर–भर कर देती जाये और मैं दन–दनादन चलाता जाऊँ। बस इसी तरह समाप्त हो जाएँ।"

एक समय, बल्कि १६२८ तक आजाद की धारणा थी कि क्रान्तिकारियों के लिए ब्रह्मचर्य का ही मार्ग उचित है। स्त्री का चुम्बक केवल उलझन और परेशानी का ही कारण होता है। मजाक में 'स्त्री' के लिए पर्यायवाची शब्द उन्होंने 'चुम्बक' ही बना रखा था। यों एक समय आजाद संस्कृत को ही सम्पूर्ण विद्या समझते थे; परन्तु अनुभव और मानसिक विकास से उनका दृष्टिकोण विस्तृत हो गया था। ऐसे ही स्त्री के सम्बन्ध में भी आजाद की धारणा बहुत बदल गई थी। झाँसी में पुलिस की सरगर्मी अधिक हो जाने पर संदेश भेजने और मँगवाने का काम वे प्रायः गुनिया और महरी से लेते थे। गुनिया का रूप रंग अच्छा होने के कारण–जैसा कि प्रायः होता है, लोग उसके सम्बन्ध में बातें बनाने से भी नहीं चूकते थे; परन्तु आजाद को गुनिया की ऐसी आलोचना से कोई मतलब न था। वे कहते थे–"चाहे जो कहें, हम जानते हैं, वह दगाबाज नहीं; भरोसे की है इसलिए सच्चरित्र है..." सच्चरित्र का अर्थ वे सीमित नहीं मानते थे। निष्ठा, साहस, निर्लोभ आदि का महत्व उनकी दृष्टि में कहीं अधिक था।

(शेष अगले अंक में)

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का **फ्रांस के विलर्स गिस्लेन में भारतीय.....**

विलर्स गिस्लेन में भीषण युद्ध हुआ था जिसमें ब्रिटिश भारत की घुड़सवार फौज ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था। यह शहर २६ सितंबर २०१८ को आजाद हुआ था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने इस कार्य के लिये फ्रांस की सरकार तथा भारतीय विदेश मंत्रालय को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि इससे भारतीय सैनिको का सम्मान बढ़ेगा।

शेष पृष्ठ 9 का **नागालैण्ड की सांस्कृतिक.....**

समाज में कई विविधताएँ मौजूद हैं। यह समाज कहीं मातृ–प्रधान है तो कही पितृ–प्रधान है। यहाँ के लोगों में दोनों तरह की सामाजिक–संरचनाएँ मिलती है; क्योंकि उनको अपनी भाषा के सहारे रोजगार नहीं मिलता और भाषाओं में रोजगार मिलने लगें, तो भाषाएँ जिन्दा रहेंगी, भाषाएँ समृद्ध होंगी, आपस में सहयोग करेंगी, आपस में एक–दूसरे से शब्द लेंगी समृद्ध होंगी और दुनिया भर में भाषाएँ फैलेंगी, मरेंगी नहीं। इसलिए हमारा मुख्य कर्तव्य है भाषाओं को बचाना मरने नहीं देना। बदलिये जरूर, लेकिन मारिये मत। नागालैण्ड की जनता और प्रशासन दोनों की भाषाओं के प्रति अपनी जवाबदेही को लेकर सातर्क है, क्योंकि यह उनकी स्मिता से जुड़ा प्रश्न है।

शेष पृष्ठ 1 का **बुरहान वानी के गढ़ में घुसकर.....**

लिया था। अब हमने सुरक्षा बलों से कह दिया है कि आतंकियों के खिलाफ उन्हें जो भी सख्त एक्शन लेना हो वह लें, सुरक्षा बल आतंकियों के खिलाफ अपना ऑपरेशन शुरू करें। हाल ही दिनों में कश्मीर में सेना के ऑपरेशन पर सस्पेंशन के बाद आतंकियों ने फिर से सिर उठाना शुरू कर दिया है। रमजान के महीने में ही कई बार आतंकियों ने भारतीय सुरक्षाबलों को निशाना बनाया है, १६ मई से अब तक हुए आतंकी हमलों में सुरक्षाबलों ने १७ आतंकियों को मार गिराया है। वहीं इस दौरान सुरक्षाबलों के ४ जवान शहीद हुए है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि जम्मू–कश्मीर से आंतकवाद का जब तक सफाया नहीं हो जाता है तब तक भारतीय सैनिको की कार्यवाही जारी रहें।

शेष पृष्ठ 2 का **पृथ्वी का अमृत गाय.....**

भी कोई 'साइड सफेक्ट' या नुकसान नहीं होता। प्रतिदिन गाय के दूध के सेवन से अनेक प्रकार के रोग यूँ ही दूर हो जाते हैं एवं वृद्धावस्था का विशेष प्रभाव नहीं होने पाता। इसके सेवन से शरीर में तत्काल शक्ति–स्फुरण होने लगता है। 'कारनेल विश्वविद्यालय' के पशु विज्ञान के विशेषज्ञ प्रोफेसर 'रोनाल्ड गोरायटे' का कहना है कि गाय के दूध से प्राप्त होने वाले प्रोटीन के कारण शरीर की कोशिकाएँ कैंसर युक्त होने से बचती हैं। गाय के दूध से 'कोलेस्ट्रॉल' नहीं बढ़ता बल्कि हृदय एवं रक्त की धमनियों के संकोचन का निवारण होता है। इस दूध में दूध की अपेक्षा आधा पानी डालकर, पानी जल जाय तब तक उबालकर पीने से वह कच्चे दूध की अपेक्षा पचने में अधिक हल्का होता है। गाय का दूध अत्यन्त स्वादिष्ट, कस्नग्ध, मुलायम, चिकनाईयुक्त, मधुर, शीतल, रुचिकर, बुद्धिवर्धक, स्मृतिवर्धक, जीवनदायक, रक्तवर्धक, वाजीकारक, आयुष्कारक एवं सर्वरोग को हरने वाला है। इसलिये गोदुग्ध को पृथ्वी का अमृत कहा गया है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 6 का **जम्मू कश्मीर में राष्ट्रवाद....**

उनके विरुद्ध पुलिस में रिपार्ट लिखवाना, पत्थरबाजों से आम नागरिको व सैनिकों को सुरक्षित करने वाले मेजर गोगा को ही दोषी ठहरा कर उनको न्यायायिक प्रक्रिया में उलझाना, बाज न आने पर भी लगभग दस हज़ार पत्थरबाजों के विवादों को वापस लेना, सीमाओं पर बढ़ता युद्धविराम उल्लंघन व घुसपैठ, म्यांमार के रोहिंग्या मुसलमानों को हिन्दू बहुल जम्मू क्षेत्र में बसाना, आतंकी घटनाओं पर अंकुश न लगना, अनेक युवाओं का आतंकी बनना, कठुआ कांड का झूठा प्रचार व रमजान में संघर्ष विराम की असफलता के कारण भाजपा में बेचैनी बढ़ती जा रही थी। कभी इस बहाने तो कभी उस बहाने पीडीपी ने निरंतर साझा कार्यक्रमों का उल्लंघन किया और जम्मू व लद्धाख की स्थिति सुधारने में कोई रुचि नही रखी। अनेक दुविधाओं व समस्याओं में भाजपा के अपने आक्रामक व्यवहार से पीछे हटने से पीडीपी का व्यवहार और कुटिल होता रहा और उसने कश्मीर घाटी में अलगाववादियों व आतंकवादियों के हितार्थ वातावरण बनने में को बाधा नही डाली। इस गठजोड़ सरकार के शासन काल में पीडीपी के कूटनीतिज्ञ निर्णय भाजपा के लिए एक कड़ी व कड़वी चुनौती बने रहें। क्या कारण रहा जो भाजपा अपने एक भी महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक निर्णय नही करवा सकी? जम्मू–कश्मीर में न तो अनुच्छेद ३७० को हटाने की सार्थक चर्चा हुई, न ही लाखों विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं के सुरक्षित पुनर्वास के लिए आवश्यक प्रयास किये गए एवं न ही विभाजन के समय सन १६४७ में पश्चिमी पाकिस्तान से आये हिन्दू–सिख शरणार्थियों के लगभग ३७००० परिवारों को भारतीय नागरिक होने पर भी सत्तर वर्ष बाद जम्मू–कश्मीर की नागरिकता न दिलवा पाना राष्ट्रवादी भाजपा की केवल कमजोर इच्छाशक्ति का परिणाम रहा। यह विचार करना होगा कि जब राजनीति में ऐसे बेमेल गठबंधन अपने अपने स्वार्थो के कारण राष्ट्रहित की अवहेलना करते हुए देश की संप्रभुता व अखंडता पर प्रहार करने वाले समझौतों के प्रति आतुर हो जाये तो राष्ट्रवादियों को ऐसे सत्तालोभियों के गठबंधनों का विरोध तो करना होगा। इसीलिए भाजपा विवश हो गई थी कि वह अब पीडीपी से समर्थन वापस लें और महबूबा मुफ्ती की सरकार को हटा कर वहां राज्यपाल शासन लगाये। तदानुसार १६ जून को यह निर्णय लिया गया और देशवासियों को कुछ संतोष हुआ। देर से ही सही परंतु २०१६ के लोकसभा चुनावों की भूमिका में अब भाजपा को पुनः अपने आधार "राष्ट्रवाद" के सिद्धांतों पर आना होगा। जम्मू–कश्मीर में राष्ट्रवाद का संघर्ष तभी सफल हो सकता है जब आतंकवादियों, अलगाववादियों, कट्टरपंथियों व पत्थरबाजों पर सरकार को कड़े प्रहार करें और इनको दी जाने वाली अरबों की सहायतायें बंद हों। दशकों से भारत की धन–दौलत को हडपनें और बेधड़क पाकिस्तानियों से मिलकर अपने ही देश के विरुद्ध षडयंत्र करने वाले इन तत्वों को अब और पुचकारने की नीतियों को छोड़ कर आक्रामक व राष्ट्रहितकारी नीतियों का पालन करना होगा। देश की राष्ट्रवादी जनता को मोदी जी से यह आशा है कि वे अब आतंकियों व शत्रुओं को बातों से नही सर्जिकल स्ट्राइक के समान कड़े प्रहारों से नष्ट करेंगे। आगामी लोकसभा चुनावों में अपनी विजय सुनिश्चित करने के लिए भाजपा को अल्पसंख्यकों के सशक्तिकरण की नही बहुसंख्यकों के सामर्थ्य व समर्थन की आवश्यकता होगी। राष्ट्रवादियों की विवशता को भाजपा अधिक समझती है पर उनके अनुसार कार्य करने को तथाकथित साम्प्रदायिकता के आवरण से बचने के लिए मुस्लिम सशक्तिकरण करके उनको लुभाने का प्रयास भाजपा को विजयी नही बना सकता।

शेष पृष्ठ 4 का **कोलेस्ट्रोल और स्वास्थ्य.....**

का सेवन करना लाभकारी है। पेसायलीयम घुलनशील रेशों का भण्डार है। इसका सेवन करना हितकारी है। कोलेक्ट्रोल की मात्रा कम करने के लिए जीवनचर्या, खान–पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्कता होगी। खाने में चिकनाई का उपयोग कम करें या न करें। टहलना, योग करना विशेषकर अनुलोम–विलोम, कपालभाति करना लाभकारी है।

स्पष्ट है कि कोलेक्ट्रोल की बढ़ी हुई मात्रा हानिकारक है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

जम्मू-कश्मीर चिदम्बरम् साहब का अलगाववादी दाँव

देश के पूर्व गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम् ने जम्मू–कश्मीर को ज्यादा स्वायत्तता देने की वकालत की है, जो बेहद शर्मनाक और दुःखद है। राजकोट में चिदम्बरम् ने जो कहा, वह उनकी पाकिस्तानपरस्ती का ही घोतक है। 'कश्मीर घाटी में यही माँग है कि संविधान के अनुच्छेद ३७० का सम्मान किया जाये। इसका मतलब यही है कि वे ज्यादा स्वायत्तता चाहते हैं।' यह पूछे जाने पर कि क्या वह अभी भी यही मानते हैं कि जम्मू–कश्मीर को ज्यादा स्वायत्तता दे दी जानी चाहिए? उन्होंने कहा, "हाँ।" चिदम्बरम् ने जुलाई २०१६ में भी जम्मू एवं कश्मीर को ज्यादा स्वायत्तता देने की वकालत की थी। उन्होंने कहा था कि जिसके तहत कश्मीर को बड़े पैमाने पर स्वायत्तता दी गयी थी उसे बहाल करना चाहिए। यदि यह नहीं तो देश को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इससे पहले कांग्रेस के उपाध्यक्ष नेता ने जेएनयू में भारत तेरे टुकड़े होंगे' का समर्थन किया था। भाजपा ने टिप्पणी की कि, यह हैरान करने वाला और घिनौना है किपी.चिदम्बरम भारत को टुकड़ों में तोड़ने की बात कर रहे हैं और उन लोगों को समर्थन दे रहे हैं, जो वास्तव में हमारे सुरक्षाकर्मियों की हत्या कर रहे हैं।' कांग्रेस नेता ने सरदार पटेल की धरती (गुजरात) पर यह बात कही है। जिन्होंने भारत को एक संविधान के तहत एकजुट करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। अरुण जेटली ने कांग्रेस पर जम्मू एवं कश्मीर में अलगाववाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होने कहा कि चिदम्बरम् का यह बयान भारत के राष्ट्रीय हितों को आघात पहुँचाने वाला है। यह एक गम्भीर मुद्दा है। कश्मीर में सामान्य स्थिति बनाने के लिए भारत सरकार ने जो व्यूह–रचना की है, उसके बारे में भी समझना होगा। गुप्तचर ब्यूरो के पूर्व निदेशक दिनेश्वर को कश्मीर के विभिन्न पक्षों से वार्ता कर स्थायी हल निकालने की पहल करने के लिए अधिकृत किया गया है। अमेरिका के विदेश मंत्री टिलरसन ने पाकिस्तान की भूमि पर ही चेतावनी देते हुए कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद को पूरी तरह खत्म करे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तान को इस्लामी आतंकवाद को पनाह देनेवाला देशबताया है। कश्मीर के लिए भारत सरकार ने दुनिया को यह सन्देश दिया है कि भारत हर तरह से आतंकियों के खिलाफ सुरक्षा बलों का ऑपरेशन चला रहा है। इसी वर्ष अब तक करीब डेढ़ सौ आतंकी मारे गये हैं। इसी प्रकार जाँच एजेंसी एनआईए ने टेरर फंडिंग की जाँच प्रारम्भ की है। जाँच की गिरफ्त में अलगाववादी नेता फँस चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी सलाउद्दीन के बेटे सैयद शाहिद को गिरफ्तार कर लिया गया है। शाहिद भारत के कृषि विभाग में पदस्थ है, उसे एनआईए ने जाँच के लिए दिल्ली बुलाया। भारत ने कश्मीर के अलगाववादी, आतंकवादी औरपाकिस्तान के घुसपैठियों के खिलाफ गोलियों से और कश्मीर घाटी के भ्रमित लोगों से चर्चा का रास्ता अपनाया है। कश्मीर के लोगों को यह आभास हो गया है कि अब पाकिस्तान स्वयं संकटों से घिरा हुआ है। बलूच, सिन्ध के लोग विद्रोह कर रहे हैं। हो सकता है कि १६७१ के समान पाकिस्तान के तीन–चार टुकड़े और हो जायें। कश्मीर के अलगाववादी, आतंकवादी और देशद्रोहियों को समझ में आ जाना चाहिए कि वे हरकतों से बाज नहीं आये, तो फिर अजाम भगतने के लिए तैयार रहें। इस स्थिति में श्री चिदम्बरम का वक्तव्य चिन्तनीय है।

साभार-राष्ट्रधर्म

यूरोपीय देशों में बढ़ रही है संस्कृत के प्रति रुचि किन्तु भारत में हो रही है उपेक्षा की मार

हमें संस्कृत के गुणों पर ध्यान देना होगा। अपनी आवाज की सुमधुरता, उच्चारण की शुद्धता और रचना के सभी आयामों में संपूर्णता के कारण यह सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है। यही कारण है कि अन्य भाषाओं की भांति मौलिक रूप से कभी भी इसमें पूरा परिवर्तन नहीं हुआ। मनुष्य के इतिहास की सबसे पूर्ण भाषा होने के कारण इसमें परिवर्तन की कभी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी। भारत में लगातार संस्कृत शिक्षा की अपेक्षा हो रही है। वर्तमान सरकार ने पिछले तीन वर्षों में काफी कुछ प्रयास किए हैं परन्तु संस्कृत को लेकर नकारात्मक छवि गढ़ दी गई है।

कबिरा खड़ा बजार में

सपने देखे जनता, काम से क्या लेना देना

नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की चौथी बैठक संपन्न हुई। प्रधानमंत्री के साथ २४ मुख्यमंत्री जिस बैठक में शामिल हों, उसमें देश के कई जरूरी मुद्दों पर नीतियां, योजनाएं बनाई जा सकती थीं या कम से कम उनकी रूपरेखा तैयार हो सकती थी। लेकिन अफसोस कि इस मंच से भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की ही बात की, दूसरों की बातों, मशविरों, मांगों पर गौर नहीं फरमाया। २०२२ का न्यू इंडिया, लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराना और किसानों की आय दोगुना करने जैसी घिसी–पिटी बातें ही इसमें हुई, जिनका कोई तात्कालिक नतीजा नहीं निकलना है। क्या मोदीजी के लिए रेडियो, लालकिला, चुनावी रैली और नीति आयोग इन सब में कोई फर्क ही नहीं है कि वे हर मंच से एक जैसी बातें करते हैं। उनकी बातें सुनकर मुंगेरीलाल के हसीन सपने याद आने लगते हैं, जो हकीकत से परे सपनों की दुनिया में ही खोया रहता था। अभी मोदीजी का कार्यकाल मात्र एक साल का ही बचा है, उसके बाद चुनाव होंगे और तब तय होगा कि देश में सरकार किसकी बनेगी, लेकिन मोदीजी २०१४ में भी २०२२ की बात करते थे और २०१८ में भी २०२२ की ही बात कर रहे हैं। ४ साल बाद देश किस मुकाम पर होगा, उसकी राह तो अभी बनानी पड़ेगी न। नीति आयोग का गठन भी तो मोदी सरकार ने इसीलिए किया था। नीति का फुलफार्म है नेशनल इंस्टीटयूशन आफ ट्रांसफार्मिंग इंडिया। यह योजना आयोग की जगह बना था, तो नीति के साथ आयोग भी जुड़ गया। पं नेहरू ने योजना आयोग का गठन किया था, ताकि पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा देश का सुगठित आर्थिक, औद्योगिक, संस्थागत विकास हो सके और इसमें ग्रामों से लेकर राज्यों तक की भागीदारी हो। दरअसल १६३७ के कांग्रेस राष्ट्रीय अधिवेशन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रीय योजना समिति के गठन का प्रस्ताव रखा था। उनका मानना था कि अब तक सरकारें लोगों से केवल राजस्व वसूलती हैं, उनके सर्वांगीण विकास की फिक्र नहीं करतीं। इसलिए स्वतंत्र भारत में विकास का ऐसा ढांचा बनना चाहिए जो प्रत्येक नागरिक के जीवन स्तर को ऊपर उठा सके। ऐसा तभी हो सकता है जब योजनाबद्ध तरीके से सुगठित, समयबद्ध विकास की रूपरेखा बने। आजाद भारत में योजना आयोग ने इसी विचार पर काम किया। पंचवर्षीय योजनाएं कितनी कारगर रहीं, कितनी नाकाम रहीं, इनका विश्लेषण हो सकता है। पर इनसे कम से कम जनता को यह तो पता होता था कि पांच सालों में विकास का वास्तविक लक्ष्य क्या है। आजादी के वक्त भारत कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान–तकनीकी हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। लेकिन फिर लक्ष्यों को निर्धारित किया गया। केन्द्र और राज्यों ने मिलकर उन पर काम करना शुरू किया और नतीजा यह निकला कि औद्योगिक विकास का आधारभूत ढांचा तैयार हुआ। सार्वजनिक उपक्रम के अंतर्गत कारखाने लगे, उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई। शोध कार्यों को बढ़ावा मिला, बड़े सरकारी अस्पताल खुले और शिक्षा, रोजगार सबकी सुविधा बढ़ी। न जाने मोदी सरकार को योजना आयोग में ऐसी क्या खामी नजर आंई जिसे दूर करना उनके लिए संभव नहीं हुआ और उसकी जगह नीति आयोग बन गया।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathind[illegible]ha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता रजि सं. 29007/77
दिनांक 18 जुलाई से 24 जुलाई 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।